

# श्रावक संस्कार निर्देशिका

—मंगल प्रेरणा एवं आशीर्वाद—

पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी

—प्रस्तुति—

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी

भगवान शांतिनाथ जन्म, दीक्षा व निर्वाणकल्याणक दिवस—ज्येष्ठ कृ. चतुर्दशी,  
11 जून 2010 को जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा  
घोषित "प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर वर्ष" के अन्तर्गत पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती  
माताजी के 59वें क्षुल्लिका दीक्षा दिवस-चैत्र कृ. एकम् के शुभ अवसर पर प्रकाशित



-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र., फोन नं.- (01233) 280184, 292943

Website : [www.jambudweeep.org](http://www.jambudweeep.org)

E-mail : [ravindrajain@jambudweeep.org](mailto:ravindrajain@jambudweeep.org)

COURTESY—JAIN BOOK DEPOT

C/o Shri Nabhi Kumar Manav Kumar Jain

C-4, Opp. PVR Plaza, Cannought Place, New Delhi-1

Ph.-011-23416101-02-03/Website : [www.jainbookdepot.com](http://www.jainbookdepot.com)

द्वितीय संस्करण वी.नि.सं. 2537, चैत्र कृ. एकम् मूल्य  
1100 प्रतिyौं 20 मार्च 2011 20/-रुपये

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी,  
संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं  
के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि  
विषयों पर लघु एवं बृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित  
प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक  
लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएं भी  
प्रकाशित होती रहती हैं।

—: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :—

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

—: मार्गदर्शन :—

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

—: निर्देशन :—

धर्मदिवाकर पीठाधीश क्षुल्लकरत्न श्री मोतीसागर जी महाराज

—: सम्पादक :—

कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

प्रथम संस्करण (सन् 2008)-1100 प्रतिyौं प्रकाशित

कम्पोजिंग-ज्ञानमती नेटवर्क

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

## सम्पादकीय

—कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जैन

वर्तमान मानव जीवन भौतिकता की चकाचौंध से प्रदूषित होकर प्रायः व्यसनपथ पर आरूढ़ होता दृष्टव्य हो रहा है, परन्तु ऐसे समय में भी अणुव्रतों एवं महाव्रतों को धारण करने वाले महापुरुष इस भारत वसुन्धरा को सुशोभित कर रहे हैं, यह परम आल्हाद एवं संतुष्टी का विषय है। वस्तुतः सत् संस्कारों से संस्कारित मानस पटल पर ही व्रतरूपी फसल पल्लवित हो सकती है, अतः मानव जीवन का श्रृंगार करने वाले इन संस्कारों का परिज्ञान होना अत्यंत आवश्यक है।

इसी श्रृंखला में प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजीकी समाजोपयोगी लेखनी से निःसृत 'श्रावक संस्कार निर्देशिका' नामक इस पुस्तक का प्रकाशन करने का सौभाग्य वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला को प्राप्त हो रहा है, यह हमारे लिए गौरव का विषय है क्योंकि सत् साहित्य का प्रकाशन करके पाठकों को संस्कारित करना, जीवन-मूल्यों के प्रति उनमें समर्पण उत्पन्न करना, उनके मोक्षमार्ग को प्रशस्त करना, इसी उद्देश्य को लेकर इस ग्रंथमाला की स्थापना की गई है।

इस पुस्तक में वर्णित षोडश संस्कारों, विवाह विधि, षट् आवश्यक क्रियाएँ, सूतक-पातक पालन, अहिंसक सामग्री प्रयोग, भ्रूणहत्या निषेध इत्यादि विषयों को हृदयंगम करके सुधी पाठक अपने मानव जीवन को समुन्नत बनाते हुए वास्तविक रूप में सार्थक करें, यही मंगलभावना है। साथ ही पुस्तक की प्रेरणास्रोत परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी एवं पुस्तक की प्रस्तुतकर्त्री पूज्य प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी के प्रति भी मैं अपनी हार्दिक कृतज्ञता एवं विनीत नमन ज्ञापित करता हूँ कि जिनके कृपा-प्रसाद से हमें जिनवाणी सेवा का अवसर निरंतर प्राप्त हो रहा है।



## प्रस्तावना

—ब्र. कु. स्वाति जैन (संघस्थ)

संसार की 84 लाख योनियों में चार गतियों के अंतर्गत मनुष्यगति सर्वश्रेष्ठ गति मानी गयी है, क्योंकि मनुष्य हिताहित के विवेक से सम्पन्न प्राणी होता है। मनुष्य ही एक दिन संस्कारों से संस्कारित होकर इंसान एवं भगवान की श्रेणी तक पहुँचता है, इसीलिए उसे गर्भावस्था से लेकर मरण पर्यन्त प्रतिक्षण संस्कारित करने की बात ऋषि-मुनियों ने बताया है।

जिनशासन में सर्वमान्य आर्षग्रंथ महापुराण में श्री जिनसेनाचार्य ने 16 संस्कारों का विस्तार से वर्णन किया है। उन संस्कारों के बारे में कई बार पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी अपने प्रवचनों में बताया करती हैं कि वर्तमान में जब हमारी भारतीय संस्कृति पर पाश्चात्य संस्कृति तेजी से हावी हो रही है, ऐसे में उन प्राचीन आचार्यों द्वारा वर्णित षोडश संस्कारों को जानने की अति आवश्यकता है।

इसी भावना को हृदय में रखकर पूज्य प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी ने प्रस्तुत पुस्तक "श्रावक संस्कार निर्देशिका" को प्रदान किया है। प्रथमतः इसमें अष्टमूलगुणों का वर्णन है, जिनको धारण करके ही अन्य गुण प्राप्त किये जा सकते हैं। वह अपने प्रवचनों में भी कहा करती हैं—

“जैसे जड़ के बिना वृक्ष नहीं टिक सकता है पृथ्वी पर,  
नहीं नींव के बिना बना सकता कोई मंदिर सुंदर,  
वैसे ही बिन धर्म के ये नर मानव नहीं बन सकता है,  
यदि धारण कर ले तो नर क्या नारायण बन सकता है।”

अर्थात् बीज और नींव के समान मानव जीवन की जड़ अष्टमूलगुण हैं, उनको सर्वप्रथम प्रत्येक माता-पिता द्वारा अपने बच्चों को पालन कराया जाना चाहिए। पुनः इस पुस्तक में षोडश संस्कारों का वर्णन है जो कि महापुराण के आधार पर स्व.पंडित श्री नाथूलाल जी शास्त्री द्वारा संकलित 'जैन संस्कार विधि' पुस्तक से उद्धृत किये गये हैं एवं पंडित जी द्वारा लिखित जैन विवाह विधि को भी इसमें समाविष्ट किया गया है। पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा लिखित 'जैन भारती' ग्रंथ से श्रावक की षट् आवश्यक क्रियाएँ एवं सूतक-पातक का वर्णन लिया गया है तथा स्त्रियों की रजस्वला शुद्धि का भी इसमें अच्छा वर्णन किया गया है, जिसे पढ़कर महिलाओं को अपने परिवार में रजस्वला शुद्धि का भलीभाँति पालन करना एवं कराना चाहिए।

पुनः गृहस्थों द्वारा नित्य प्रयोग करने योग्य शुद्ध प्रसाधन सामग्री के बारे में जानकारी प्रदान की गई है। पुस्तक के अंत में आधुनिक वैज्ञानिक माध्यमों द्वारा भ्रूण हत्या के प्रति महिलाओं की बढ़ती हुई अभिरुचि देखकर पूज्य माताजी ने विभिन्न स्रोतों के आधार से भ्रूण हत्या के द्वारा होने वाली महान हिंसा तथा शारीरिक हानियों के विषय में प्रकाश डाला है। इन सभी विषयों को पढ़कर आप सभी पाठकगण अपने गृहस्थ जीवन को सदाचारी एवं संस्कारित बनायें, यह मंगल भावना है।

## परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त-परिचय

—प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जन्मस्थान—टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

जन्मतिथि—आसोज सुदी 15 (शरदपूर्णिमा) वि. सं. 1991, (22 अक्टूबर सन् 1934)

जाति—अग्रवाल दि. जैन, गोत्र—गोयल, नाम—कु. मैना

माता-पिता—श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जैन

आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत—ई. सन् 1952 में बाराबंकी में शरदपूर्णिमा के दिन

क्षुल्लिका दीक्षा—चैत्र कृ. 1, ई. सन् 1953 को महावीरजी अतिशय क्षेत्र (राज.) में आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से। नाम—क्षुल्लिका वीरमती

आर्यिका दीक्षा—वैशाख कृ. 2, ई. सन् 1956 को माधोराजपुरा (राज.) में चारित्रचक्रवर्ती 108 आचार्य श्री शांतिसागर जी की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से।

साहित्यिक कृतित्व—अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, मूलाचार, कातंत्र-व्याकरण, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों के अनुवाद/टीकाएं एवं 250 विशिष्ट ग्रंथों की लेखिका। सन् 1995 में अवध वि.वि. (फैजाबाद) द्वारा "डी.लिट." की मानद उपाधि से विभूषित।

तीर्थ निर्माण प्रेरणा—हस्तिनापुर में जंबूद्वीप तेरहद्वीप, तीनलोक आदि रचनाओं के निर्माण, शाश्वत तीर्थ अयोध्या का विकास एवं जीर्णोद्धार, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का निर्माण, तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास यथा- भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में 'नंदावर्त महल' नामक तीर्थ निर्माण, भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी तीर्थ (निकट गोरखपुर-उ.प्र.) का विकास, भगवान पार्श्वनाथ केवलज्ञानभूमि अहिच्छत्र तीर्थ पर तीस चौसी मंदिर, हस्तिनापुर में जंबूद्वीप स्थल पर भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग खम्भासन प्रतिमा, मांगीतुंगी में निर्माणाधीन 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा इत्यादि।

महोत्सव प्रेरणा—पंचवर्षीय जंबूद्वीप महामहोत्सव, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महाकुंभ मस्तकाभिषेक, कुण्डलपुर महोत्सव, भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव, दिल्ली में कल्पद्रुम महामण्डलवर्धन का ऐतिहासिक आयोजन इत्यादि। विशेषरूप से 21 दिसम्बर 2008 को जंबूद्वीप स्थल पर विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसका उद्घाटन भारत की राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभादेवीसिंह पाटील द्वारा किया गया।

शैक्षणिक प्रेरणा—'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, इतिहासकार सम्मेलन, न्यायाधीश सम्मेलन एवं अन्य अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार आदि।

रथ प्रवर्तन प्रेरणा—जंबूद्वीप ज्ञानज्योति (1982 से 1985), समवसरण श्रीविहार (1998 से 2002), महावीर ज्योति (2003-2004) का भारत भ्रमण।

इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामना है।

## दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान-संक्षिप्त परिचय

—पीठाधीश क्षुल्लक मोतीसागर

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान की स्थापना पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से सन् 1972 में राजधानी दिल्ली में हुई थी। संस्थान का मुख्य कार्यालय सन् 1974 से हस्तिनापुर में प्रारंभ हुआ। इस संस्थान के अन्तर्गत अनेक गतिविधियाँ हस्तिनापुर में तथा अन्यत्र चल रही हैं—

1. सन् 1972 से वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला के अन्तर्गत लाखों ग्रंथ प्रकाशित हो रहे हैं।
  2. सन् 1974 से इस संस्थान के मुखपत्र के रूप में 'सम्यग्ज्ञान' हिन्दी मासिक पत्रिका का निरंतर प्रकाशन हो रहा है।
  3. सन् 1974 से 1985 तक हस्तिनापुर में जंबूद्वीप रचना का निर्माण कार्य हुआ।
  4. सन् 1974 से अब तक जंबूद्वीप रचना के अतिरिक्त अनेक जिनमंदिरों का निर्माण हुआ है—कमल मंदिर, तीन मूर्ति मंदिर, ध्यान मंदिर, शांतिनाथ मंदिर, वासुपूज्य मंदिर, ॐ मंदिर, सहस्रकूट मंदिर, विद्यमान बीस तीर्थंकर मंदिर, आदिनाथ मंदिर, अष्टापद मंदिर, ऋषभदेव कीर्तिस्तंभ, स्वर्णिम तेरहद्वीप रचना, नवग्रहशांति जिनमंदिर, तीन लोक रचना एवं श्री शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग प्रतिमाओं की स्थापना।
  5. जंबूद्वीप पुस्तकालय जिसमें लगभग 15000 ग्रंथ संग्रहीत हैं।
  6. णमोकार महामंत्र बैंक जिसमें भक्तों द्वारा लिखकर भेजे गये करोड़ों णमोकार मंत्र जमा किये जाते हैं।
  7. समय-समय पर शिक्षण-प्रशिक्षण शिविरों तथा संगोष्ठियों के आयोजन किये जाते हैं।
  8. यात्रियों के शुद्ध भोजन के लिए राजा श्रेयांस भोजनालय का संचालन।
  9. यात्रियों के ठहरने के लिए आधुनिक सुविधायुक्त डीलक्स फ्लैट्स वाली ऋई धर्मशालाओं तथा कोठियों एवं बंगलों का निर्माण किया गया है।
  10. जंबूद्वीप परिक्रमा के लिए नौका विहार, ऐरावत हाथी तथा मनोरंजन हेतु मिनी ट्रेन, झूले आदि हैं।
  11. ज्ञानमती कला मंदिरम् में हस्तिनापुर के प्राचीन इतिहास से संबंधित झॉकियाँ हैं।
  12. तीर्थंकर जन्मभूमियों की वंदना एवं धार्मिक फिल्मों का प्रदर्शन करने वाले थियेटर से समन्वित गणिनी ज्ञानमती हीरक जयंती एक्सप्रेस।
- दिल्ली, मेरठ, मुजफ्फरनगर, हरिद्वार, झॉसी, तिजारा आदि से जंबूद्वीप स्थल तक आने के लिए दिन भर बसें मिलती रहती हैं।
- दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान के अन्तर्गत भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) बिहार में भव्य "नंदावर्त महल" तथा प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में निर्मित तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का भी संचालन होता है।
- जंबूद्वीप एवं अन्य रचनाओं के दर्शन हेतु हस्तिनापुर पधारकर आध्यात्मिक एवं भौतिक सुख की प्राप्ति करें।

## वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला के शिरोमणि संरक्षक

1. श्रीमती निर्मला जैन ध.प. स्व. श्री प्रेमचन्द्र जैन, तत्पुत्र प्रदीप कुमार जैन, स्त्री बावली, दिल्ली-6।
2. श्रीमती सुमन जैन ध.प. श्री दिग्विजय सिंह जैन, इंदौर।
3. श्री महावीर प्रसाद जैन संघपति, जी-19, साऊथ एक्सटेन्शन, नई दिल्ली।
4. श्री महेन्द्र पाल हरेन्द्र कुमार जैन, सूरजमल विहार, दिल्ली।
5. श्रीमती मोहनी जैन ध.प. श्री सुनील जैन, प्रीत विहार, दिल्ली।
6. श्री देवेन्द्र कुमार जैन (धारुहेड़ा वाले) गुड़गाँव (हरि.)।
7. श्रीमती शारदा रानी जैन ध.प. स्व. रिखबचंद जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली-92।
8. डॉ. देवेन्द्र कुमार जैन, भोपाल (म.प्र.)
9. श्रीमती संगीता जैन ध.प. श्री संजीव कुमार जैन, शेरकोट (बिजनौर) उ.प्र.
10. श्री अनिल कुमार जैन, दरियागंज, दिल्ली
11. श्री बी.डी. मदनराइक, मुम्बई
12. श्री धनकुमार जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली-92।
13. श्री जितेन्द्र कुमार जैन एवं श्रीमती सुनीता जैन कोटडिया, फ्लोरिडा, यू.एस.ए.
14. श्रीमती विमला देवी जैन ध.प. श्री ओमप्रकाश जैन, स्वालिक नगर, हरिद्वार (उत्तराखंड)।
15. श्री अमित जैन एवं संभव जैन सुपुत्र श्रीमती अनीता जैन ध.प. श्री मूलचंद जैन पाटनी, दिसपुर (कामरूप) आसाम।
16. श्रीमती अजित कुमारी जैन ध.प. श्री महेन्द्र कुमार जैन, ओबेदुल्लागंज (रायसेन) म.प्र.।
17. श्री नाभिकुमार जैन, जैन बुक डिपो, सी-4, पी.वी.आर. प्लाजा के पीछे, कर्नेट प्लेस, नई दिल्ली।

## वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला के परम संरक्षक

1. श्री माँगीलाल बाबूलाल पहाड़े, हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश)।
2. डॉ. प्रकाशचन्द्र जैन, 792 विवेकानंदपुरी, सिविल लाइन, सीतापुर (उ.प्र.)।
3. श्री सुमत प्रकाश जैन, गजजू कटरा, शाहदरा, दिल्ली।
4. श्री सुनील कुमार जैन, द्वारा-सुनील टैक्सटाईल्स, सरधना (मेरठ) उ.प्र.।
5. श्री प्रकाश चंद अमोलक चंद जैन सराफ, सनावद (म.प्र.)।
6. श्री प्रद्युम्न कुमार जवेरी, रोकडियालेन, बोरीवली (वेस्ट) मुंबई।
7. श्रीमती उर्मिला देवी ध.प. श्री कान्ती प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।
8. श्रीमती उषा जैन ध.प. श्री विमल प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।
9. श्री आनन्द प्रकाश जैन (सौरभ वाले), गांधीनगर, दिल्ली।
10. श्रीमती सरिता जैन ध.प. श्री राजकुमार जैन, किदवई नगर, कानपुर।
11. स्व. श्रीमती कैलाशवती ध.प. श्री कैलाश चन्द्र जैन, तोपखाना बाजार, मेरठ।
12. श्री भानेन्द्र कुमार जैन, द्वारा-श्री विद्या जैन, भगत सिंह मार्ग, जयपुर।
13. श्री प्रदीप कुमार शान्तिलाल बिलाला, अनूपनगर, इंदौर, (म.प्र.)।
14. श्री सुरेशचंद पवन कुमार जैन, बाराबंकी (उ.प्र.)।
15. श्री नथमल पारसमल जैन, कलकत्ता-7।
16. श्रीमती स्व. शांताबाई ध.प. श्री कमलचंद जैन, सनावद (म.प्र.)।
17. श्री रूपचंद जैन कटारिया, दिल्ली
18. श्री आशु जैन, कालका जी, नई दिल्ली

## विषयानुक्रमणिका

| क्र. | नाम   | पृष्ठ नं. |
|------|---|-----------|
| 1.   | अष्टमूलगुण  | 1         |
| 2.   | षोडश संस्कार  | 7         |
| 3.   | जैन विवाह विधि  | 14        |
| 4.   | श्रावक की षट् आवश्यक क्रियाएँ                                   | 20        |
| 4.   | सूतक-पातक वर्णन   | 27        |
| 5.   | रजस्वला स्त्री का अशौच  | 29        |
| 6.   | अहिंसक बनने के लिए कम से कम इतना अवश्य करें।                    | 34        |
| 7.   | जैन हर्बल्स कंपनी-मुम्बई द्वारा उत्पादित अहिंसक प्रसाधन सामग्री | 37        |
| 8.   | गर्भपात – माँ की ममता पर कुठाराघात                              | 43        |





## श्रावक संस्कार निर्देशिका

प्रस्तुति—प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं।

णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।।

### अष्टमूलगुण

(श्रावक संस्कार)

**मूलगुण क्या है?**—जिस प्रकार मूल (नींव) के बिना मकान नहीं टिक सकता, मूल (जड़) के बिना वृक्ष नहीं उग सकता, मूल (स्रोत) के बिना नदी, कुएँ, नहर आदि अपना नाम सार्थक नहीं कर सकते, उसी प्रकार मूलगुणों के बिना मनुष्य 'श्रावक' यह संज्ञा प्राप्त नहीं कर सकता।

आधुनिक युग जहाँ अनुसंधानों की गहराइयों तक पहुँच रहा है, वहीं अपनी अज्ञान के अनुसंधान में बिल्कुल सुप्त है। जबकि आत्मिक अनुसंधान सर्वप्रथम अपनमूल विषय होना चाहिए। कवियों ने भी इस बात को स्वीकार किया है कि हम परफेक्ट और देखने की बजाय पहले स्व का अवलोकन करें। इसलिए कहा भी है

**'बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न दीखा कोय।**

**जो घट देखा आपनी, मुझसे बुरा न कोय।।**

अधिक नहीं तो कतिपय क्षणों में अपनी ओर दृष्टि डालकर गुण-अवगुणों का चिंतन अवश्य करना चाहिए। जैसे वृक्ष की जड़ जब तक मजबूत नहीं होती, तब तक वह दूसरों को फल प्रदान करने में सक्षम नहीं हो सकता। मकान या मंदिर की नींव जब तक मजबूत नहीं होगी, तब तक वह अपने ऊपर की मंजिलों का भार सहन नहीं कर सकता, वैसे ही मानव भी जब तक अपनी नींव को

(2)

श्रावक संस्कार निर्देशिका

मजबूत करने हेतु अष्ट-मूलगुणों का पालन नहीं करेगा, तब तक उसका जीवन न तो स्वयं फलीभूत हो सकता है और न ही परिवार, समाज और देश के लिए प्रेरणापात्र बन सकता है।

मानव का जीवन एक आदर्श जीवन कहा जाता है। जिस प्रकार आदर्श—दर्पण में मुँह देखकर व्यक्ति अपने चेहरे के दाग-धब्बों को छुड़ाकर उसे साफ-सुथरा बना लेता है, उसी प्रकार आपका जीवन भी ऐसा स्वच्छ दर्पण हो जिससे हर मानव जीवन जीने की कला सीख सके। इसीलिए कतिपय स्वाभाविक गुणों का पालन हर व्यक्ति के लिए आवश्यक है जो कि मूलगुण के नाम से जाने जाते हैं।

**मूलगुण कितने हैं?**—मनुष्यों में दो श्रेणियाँ देखी जाती हैं—

1. गृहस्थ

2. साधु

ये दोनों ही अपने कर्तव्यों का सुचारुरूप से पालन करने हेतु मूलगुणों—आवश्यक क्रियाओं को अंगीकार करते हैं। साधु, जो कि पूर्णरूप से सांसारिक क्रियाओं के त्यागी होते हैं, उन्हें 28 मूलगुण पालन करने होते हैं तथा श्रावक, जो गृहस्थाश्रम चलाता है उसे मात्र 8 मूलगुण का पालन करने का आदेश आचार्यों ने दिया है।

श्रावक होने के नाते आपको अपनी ओर झाँककर देखना होगा कि कहीं ऐसा तो नहीं हो रहा है कि साधुओं के अवगुणों की खोज करते-करते आप अपने मूलगुणों से विरहित हो गए हैं या पश्चिमी सभ्यता ने आपके ऊपर अपना प्रभाव तो नहीं जमा लिया है जिसके कारण बेमालूम अनार्य संस्कृतियाँ आपके नजदीक पदार्पण कर रही हैं।

चूँ तो जन्म लेने के 45 दिनों बाद प्रत्येक बालक को प्राचीन परम्परानुसार माताएँ मंदिर ले जाती हैं, वहाँ गुरुओं के द्वारा उसके कान में मंत्र सुनाकर उसे अष्टमूलगुण ग्रहण कराए जाते हैं, लेकिन आठ वर्ष तक बालक की अज्ञान अवस्था होती है, अतः तब तक उसके पालन की जिम्मेदारी माता-पिता के ऊपर होती है आठ वर्षों के पश्चात् उन्हें अष्टमूलगुणों के नाम और उसका महत्व बतलाकर बालक को पुनः मूलगुण ग्रहण कराया जाता है।

शास्त्रों में मुख्यरूप से तीन प्रकार के मूलगुणों का वर्णन आता है।

1. पुरुषार्थसिद्धि उपाय में आचार्यश्री अमृतचन्द्रसूरि ने कहा है—

**मद्यं मासं क्षौद्रं पञ्चोदम्बर फलानि यत्नेन।**

**हिंसाव्युपरतकामैर्मोक्तव्यानि प्रथममेव।।**

अर्थात् मद्य (शराब), मांस (अण्डे, मछली वगैरह), मधु (शहद) ये तीन प्रकार होते हैं जो सर्वथा निंद्य और अधमगति में पहुँचाने वाले ही हैं और इनके सेवन से स्वास्थ्य एवं धन की भी बड़ी मात्रा में बर्बादी होती है।

**पाँच उदम्बर फल**—बड़, पीपल, पाकर, कटूमर और गूलर इनको खाने में भी त्रस जीवों की हिंसा होती है, अतः 3+5=8 इन आठ वस्तुओं का त्याग करना ही अष्टमूल गुण कहलाता है, जिसे हर व्यक्ति सहज ही ग्रहण कर सकता है।

इन अपवित्र पदार्थों का नाममात्र सुनते ही कोई-कोई भोजन भी छोड़ देते हैं, किन्तु कुसंगति के प्रभाव से आपके जीवन में यदि इनके प्रवेश की संभावना भी हो तो इन्हें आप अपना जीवनशत्रु समझकर शीघ्र इनसे दूर हट जाएँ ताकि आपका जीवन भगवान महावीर और महात्मा गांधी जैसा महान बन सके। इसमें कोई घबराने की बात नहीं होती। आपको यह ध्यान रखना होगा कि मानवही हैवान बनता है एवं मानव ही भगवान बनता है, केवल अपनी क्रिया-कलापों के बल पर।

तीर्थकर महावीर भी एक बार कई भवपूर्व भील की पर्याय में जंगल में एक मुनि को दूर से पशु समझकर मारने को उद्यत हो गए, तब उनकी पत्नी ने कहा—इन्हें मत मारो, ये वन देवता हैं। भील उनके चरणों में नतमस्तक हो गया और मुनिराज के द्वारा अष्टमूलगुण का उपदेश सुनकर उसे ग्रहण किया। बस! यहीं से उसके जीवन का उत्थान प्रारंभ हुआ और वह एक दिन तीर्थकर महावीर बन गया।

इसी प्रकार हे मानव! आप सबकी आत्मा में भगवान बनने की शक्ति विद्यमान है, उसको प्रकट करने में देरी किस काम की?

इतना सरल कार्य “हरड़ लगे ना फिटकरी रंग चोखो आ जाए” आपको न तो इसके पालन में पैसा खर्च करना है और न ही शारीरिक परिश्रम, किन्तु घर बैठे पुण्य का भण्डार स्वयमेव भर जावेगा तथा इनके सेवन से धन-हानि, यश-हानि, स्वास्थ्य-हानि, धर्म-हानि ये चार हानियाँ अवश्यभावी हैं।

## 2. द्वितीय प्रकार के अष्टमूलगुण—

**मद्यपलमधुनिशासन, पंचफलीविरतिपंचकाप्तनुतिः।**

**जीवदयाजलगालन, मिति च क्वचिदष्टमूलगुणाः॥**

पं. श्री आशाधर जी ने सागार धर्माभूत में ये अष्टमूलगुण भी बताए हैं—

1. मद्य 2. मांस 3. मधु 4. रात्रि भोजन 5. पंच उदम्बर फल, इन पाँचों का त्याग और 6. जीवदया का पालन 7. जल छानकर पीना एवं 8. पंचपरमेष्ठी को नमस्कार। इसमें रात्रि भोजन में कम से कम अन्न त्याग तो अवश्य करें। पंचपरमेष्ठी नमस्कार में मंदिर जाकर देवदर्शन करना चाहिए। जहाँ मंदिर नहीं

है अथवा विशेष अस्वस्थता है तो घर में ही णमोकार मंत्र की माला फेर लें। जल छानकर पीने का नियम यदि बाहर न पल सके तो घर में छानकर ही पीना चाहिए।

## 3. तृतीय प्रकार के अष्टमूलगुण—

आचार्यश्री समंतभद्रस्वामी ने रत्नकरण्डश्रावकाचार में कहा है—

**मद्यमांसमधुत्यागैः सहाणुव्रतपंचकम्।**

**अष्टौ मूलगुणानाहुर्गृहिणां श्रमणोत्तमाः॥**

अर्थात् मद्य, मांस, मधु इन तीन प्रकारों का त्याग और पाँच अणुव्रतों का पालन तृतीय प्रकार का अष्टमूलगुण है। इसमें पंचाणुव्रतों के पालन से आज व्यक्ति दूर भागते हैं किन्तु यदि आप इनकी वास्तविकता समझ लें तो पायेंगे कि इनका पालन भी अति सरल है। इनका स्पष्टीकरण निम्न प्रकार है—

1. **अहिंसाणुव्रत**—संकल्पपूर्वक किसी भी प्राणी की हिंसा नहीं करने वाला मनुष्य अहिंसाणुव्रती कहलाता है।

2. **सत्याणुव्रत**—स्थूलरूप से झूठ नहीं बोलना सत्याणुव्रत है।

3. **अचौर्याणुव्रत**—बिना अनुमति लिए दूसरे की वस्तु नहीं लेना अचौर्याणुव्रत है।

4. **ब्रह्मचर्याणुव्रत**—पुरुष के लिए अपनी पत्नी के सिवाय अन्य समस्त स्त्रियाँ माता-बहन के समान तथा स्त्रियों के लिए अपने पति के सिवाय अन्य समस्त पुरुष पिता और भाई के समान होते हैं। इसी प्रकार का शीलव्रत पालन करना ब्रह्मचर्याणुव्रत कहलाता है।

5. **परिग्रहपरिमाण अणुव्रत**—आवश्यकतानुसार सीमित परिग्रह का रखना परिग्रहप्रमाण अणुव्रत कहलाता है। मनुष्य की इच्छाएँ असीमित हैं किन्तु उन्हें अधिक से अधिक सीमा में भी सीमित कर लेना अणुव्रत हो जाता है। जैसे-आप अपनी इच्छानुसार अधिक से अधिक परिग्रह रखें। सोना, चाँदी, नगद, मकान, भूमि आदि कितनी ही सम्पत्ति अपने नाम से रखें, किन्तु तीन लोक के अनन्त परिग्रह के पाप से छूटने हेतु ये सीमाएँ आवश्यक होती हैं।

इन पंच अणुव्रत पालन करने वालों के लिए आचार्यश्री समन्तभद्र स्वामी कहते हैं—

**पंचाणुव्रतनिधयो, निरतिक्रमणा फलन्ति सुरलोकम्।**

**यत्रावधिरष्टगुणाः दिव्यशरीरं च लभ्यन्ते॥**

अर्थात् इन पाँच अणुव्रतों का निरतिचार पालन करने वाले व्यक्ति स्वर्गलोक को प्राप्त करते हैं जहाँ पर अवधिज्ञान, अणिमा, महिमा आदि ऋद्धियाँ तथा दिव्य वैक्रियिकशरीर प्राप्त करते हैं।

धर्मप्राण भारत देश के नागरिक होने के नाते आप स्वाभाविकरूप में उपर्युक्त 3 प्रकार के मूलगुणों में से किसी न किसी का पालन अवश्य करते होंगे। यदि आपको स्मरण नहीं है तो इस पावन प्रसंग का लाभ उठाकर जीवन को सदाचारी बनाएँ।

सदाचार और शाकाहार को प्रत्येक सम्प्रदाय में मान्यता प्रदान की गई है, स्वामी दयानंद सरस्वती ने भी कहा है—

“जो लोग माँस भक्षण करते हैं तथा शराब पीते हैं, उनके वीर्यादि धातु दुर्गन्ध से दूषित हो जाते हैं।”

सिक्ख सम्प्रदाय में “बार मास माँस महल्ला” नामक ग्रंथ में पृ. 140 पर कहा है—

**जो रक्त लगे कापड़े, जामा होवे पलीत।**

**जो रक्त पीवे मानुषा, तिन क्यों निर्मल चित्त।।**

अर्थात् कपड़े पर खून लगने से वह कपड़ा अपवित्र हो जाता है तो हे मनुष्य! यदि तू अपवित्र रक्त पी जायेगा तो तेरा चित्त निर्मल कैसे रह सकता है?

इसी प्रकार “नानक प्रकाश” नामक ग्रंथ में (पूर्वार्ध अध्याय 55) वर्णन आता है कि गुरु नानक को एक बार कोई व्यक्ति आमिष भोजन परोसकर स्वागत करने लगा तो गुरु नानक उसका आतिथ्य स्वीकार न करते हुए उसे समझाते हैं—

“हम तुम्हारे यहाँ भोजन नहीं कर सकते क्योंकि तुम सभी जीवों को दुख देते हो। सबसे पहले तुम माँस खाना छोड़ दो, जिस कारण तुम्हारा जीवन नष्ट हो रहा है। तापसी प्रवृत्ति छोड़कर सुख देने वाली प्रभु की भक्ति करो।

इस्लाम धर्म में भी कई स्थानों पर मांसाहार को सदैव पाप बताया है। जैसे- कुरान, मजीद-“सूरा हज जिकर हज” अर्थात् “अल्ला ताला को तुम्हारी कुर्बानियों-गोशत और खून से कोई वास्ता नहीं, केवल विश्वास की जरूरत है।

पारसी धर्म भी मांसाहार का घोर विरोध करता है। यथा—

अवस्ता भाषा में (इजस्ने-23वें हाय)–

**मजदाओ अकामरोद इओगे ओशमेरदान।**

**ओरु आखश आरे बती जीओ तुम।।**

अर्थात् जो पशु-पक्षियों को मारने तथा खाने का हुक्म देते हैं, उनको खुदा ने मारने की आज्ञा दी है।

महाभारत में मांसाहार का निषेध किया है।

जैसे— **न हि माँसं तृणात् काष्ठादुपलाद्वापि जायते।**

**हत्त्वा जन्तुं ततो मांसंतस्माद्दोषोऽस्तुभक्षणे।।**

अर्थात् माँस तृण में से, काष्ठा में से या पत्थर में से पैदा नहीं होता, माँस तो जन्तु को मारकर ही पैदा किया जाता है अतः माँस भक्षण में महादोष माना गया है।

मनुस्मृति में भी कहा है—

**अनुमन्ता विशसिता निहन्ता क्रयविक्रयो।**

**संस्कर्ता चोपहर्ता च खारकश्चेति घातकाः।।**

इसका अर्थ यह है कि माँस खाने की अनुमति देने वाला, काटने वाला, मारने वाला, मोल लेने और बेचने वाला, लाने वाला और खाने वाला, ये सभी घातक होते हैं।

जैनधर्म में तो मांसाहार का बड़ी ही दृढ़तापूर्वक प्रतिषेध किया ही गया है। अहिंसा का बड़ा सूक्ष्म विवेचन जैन ग्रंथों में पाया जाता है। जीवन में सदैव यह चिंतन करना चाहिए कि “जिस तरह हम सुख से जीना चाहते हैं और दुःख से बचना चाहते हैं” उसी तरह संसार के सभी छोटे-बड़े प्राणी सुखपूर्वक जीना चाहते हैं। हम सभी एक-दूसरे को कष्ट न देकर सुख पहुँचाने का ही प्रयत्न करें’ इसी पवित्र भावना का नाम ‘अहिंसा’ है। भगवान महावीर के शब्दों में यही “जिओ और जीने दो” का सिद्धान्त है।

इन्हीं सब धार्मिक मान्यताओं में पले हुए राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने भी कहा है—“चाहे कुछ भी हो, धर्म हमें अण्डे अथवा माँस खाने की आज्ञा कभी नहीं देता है।”

एक कवि की पंक्तियाँ भी उपर्युक्त समस्त अभिप्रायों की पुष्टि करती हैं—

**“है भला तेरा इसी में, मांस खाना छोड़ दे।**

**इस मुबारक पेट में, कबरें बनाना छोड़ दे।।**

मानवमात्र को अष्टमूलगुणों का स्मरण दिलाने हेतु ही हस्तिनापुर की पावन वसुन्धरा पर “अष्टमूलगुण प्रदर्शनी” की समायोजना हुई एवं मूलगुण ग्रहण नियम पत्र भरवाने का प्रेरणास्पद कदम उठाया गया। इस परमपुनीत एवं लघुकाय नियम का पालन कर जीवन को समुन्नत बनाएँ, यही मंगलभावना है।



## षोडश संस्कार

जैसे खान में से निकला स्वर्ण पाषाण योग्य निमित्त पाकर मूल्यवान बन जाता है और ईंट, चूना, सीमेंट आदि वस्तुएँ कारीगर के संयोग से सुन्दर महल के रूप में परिवर्तित हो जाती हैं, उसी प्रकार मानव पर्याय में गर्भ में आते ही बालक-बालिकाएँ उपयोगी संस्कार मिल जावें तो योग्य बन सकते हैं।

प्रथम तो माता-पिता के रज-वीर्य से बनने वाला पिण्ड, जहाँ जीव आता है, उस पर माता-पिता के जीवन का प्रभाव पड़ता है। गर्भाधान के पश्चात् माता के सङ्घिचार, आचार एवं आहार-विहार के प्रभाव से बालक की शक्तियाँ दृढ़ होती हैं। जैसे कच्चे गेहूँ और चने को सूर्य की धूप-पानी आदि पका देते हैं उसी प्रकार अपने बालक-बालिकाओं को सुसंस्कारित करने के लिए उचित निमित्त (संस्कार विधि) की आवश्यकता है।

माता के गर्भ में उत्पन्न होने के पश्चात् और गर्भ में आने के पूर्व संस्कारों का जो महत्व है तथा जिनसे जीवन निर्माण होता है, वे संस्कार सोलह प्रकार के होते हैं, अतः इन्हें षोडश संस्कार के नाम से जाना जाता है।

बिना साफ की गई भूमि में जिस प्रकार बीज फलीभूत नहीं होता, उसी प्रकार यह जीवित शरीर, विधिपूर्वक संस्कारों के बिना संयम, व्रत और शुभाचरण का पात्र नहीं होता।

गर्भ में आने वाले बालक को उसकी मानसिक और शारीरिक शक्तियों की दृढ़ता और कमजोरी माता द्वारा प्राप्त होती है। माता के मन, वचन, काय की क्रिया का असर संतान के ऊपर पड़ता है, अतः माता को विवेकशील और धर्मात्मा होना चाहिए।

संतान के पूर्वोपार्जित कर्म, उसके निर्माण में अन्तरंग निमित्त हैं और बाह्य निमित्त अन्य सामग्री होती है। जैसे माता के आहार का अंश गर्भस्थित संतान को प्राप्त होता है, जिससे उसके शरीर को पोषण मिलता है साथ ही उसके विचारों व क्रियाओं का उस पर असर होता है, अतः बच्चों को सुयोग्य बनाने के लिए योग्य माताओं के समान शास्त्रानुसार धार्मिक संस्कारों की आवश्यकता है। ये संस्कार वैज्ञानिक दृष्टि से भी द्रव्य परमाणु की शक्ति की अपेक्षा सेबच्चों के मन, वचन और शरीर के भीतर अपना प्रभाव उत्पन्न करते हैं।

1. **प्रथम गर्भाधान संस्कार**—विवाह केवल विषयाभिलाषा से ही नहीं, अपितु पुत्रोत्पत्ति एवं गार्हस्थ्य जीवन में परस्पर सहयोग द्वारा सदाचरण, लोकसेवा तथा आत्मोन्नति के उद्देश्य से किया जाता है।

स्त्री को मासिक धर्म के तीन दिन, एकान्त में बिना किसी को स्पर्श किये, व्यतीत करना चाहिए। वह चौथे दिन स्नान कर घर के भोजन आदि विशेष कार्यों को न करते हुए बारह भावना का चिन्तन करती रहे और साधारण कामकाज में भाग लेती रहे। पाँचवें दिन शुद्ध होकर मंदिर में जाकर जिनेन्द्र दर्शन, पूजन, स्वाध्याय आदि करे। इस प्रकार उसे व्यवहार दृष्टि से 3 दिन और धर्म की दृष्टि से चार दिन की अशुद्धि पालनी चाहिए।

गर्भाधान के पूर्व संस्कार विधि में विनायक यंत्रपूजा व हवन में गृहस्थाचार्य निम्नलिखित विशिष्ट मंत्रों से आहुति देते हुए पति-पत्नी पर आशीर्वादरूप में पीले चावल क्षेपण करें—

“सज्जातिभागी भव, सद्गृहिभागी भव, मुनीन्द्रभागी भव, सुरेन्द्रभागी भव, परमराज्यभागी भव, आर्हन्त्यभागी भव, परमनिर्वाणभागी भव।” पश्चात् पुण्याहवाच, शान्तिपाठ, समाधि भक्ति व समापन पाठ पढ़कर पूजा पूर्ण करें। अन्त में सौभाग्यवती स्त्रियों से आशीर्वाद ग्रहण करें।

2. **द्वितीय प्रीति संस्कार**—गर्भ के दिन से तीसरे माह में गर्भाधान क्रिया के अनुसार विनायक यंत्र पूजा, 112 आहुतियों से हवन, पुण्याहवाचन, शान्तिपाठ, समाधि पाठ, क्षमापान करके हवन के नीचे लिखे खास मंत्रों की आहुति दें और पति-पत्नी पर पुष्पक्षेपण करें।

“त्रैलोक्यनाथो भव, त्रिकालज्ञानी भव, त्रिरत्नस्वामी भव’, इसी समय “ॐ कंठ व्हः पः असि आ उसा गर्भार्भकं प्रमोदेन परिरक्षत स्वाहा’ यह मंत्र तीन बार पढ़कर गर्भवती पर पति द्वारा जलसेचन करावें।

3. **तृतीय सुप्रीति संस्कार**—गर्भाधान के पाँचवें माह में यह सुप्रीति या पुँसवन क्रिया श्रवण, रोहिणी, पुष्य नक्षत्र, रवि, मंगल, गुरु, शुक्रवार, 2, 3, 5, 7, 10, 11, 12, 13 तिथि के मुहूर्त में करें। इसमें पूर्ववत् पूजा, हवन, पुण्याहवाच आदि करके निम्न प्रकार खास मंत्रों से आहुति व पुष्पों से आशीर्वाद दें।

‘अवतारकल्याणभागी भव, मन्दरेन्द्राभिषेक कल्याणभागी भव, निष्क्रांति कल्याणभागी भव, आर्हन्त्य कल्याणभागी भव, परमनिर्वाण कल्याणभागीभव’। इसी समय पति, पत्नी के सिर की माँग में सिंदूर और 108 जौ के दानों की पहले से तैयार कराई गई माला ‘ॐ झं वं क्ष्वीं क्ष्वीं हं सः कान्तागले यवमालां क्षिपामिझौं स्वाहा’ मंत्र पढ़कर पत्नी के गले में पहनावें। पत्नी अपनी आँखों में अंजन लगवें।

4. **चतुर्थ धृति या सीमंतोन्नयन संस्कार**—यह क्रिया सातवें माह में शुभ मुहूर्त

मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, मूल, उत्तराश्रय, रोहिणी, रेवती इन में से किसीक्षत्र में व रवि, मंगल, गुरु इन वारों तथा 1, 2, 3, 5, 7, 10, 11, 13 इन तिथियों में किसी तिथि में करें। इसका दूसरा नाम खोला भरना है। इसमें पहले के समान पूजा, हवन पुण्याहवाचन आदि करें। नीचे लिखे खास मंत्रों से आहुति व आशीर्वाद दें-

सज्जातिदातृभागी भव, सद्गृहस्थदातृभागी भव, मुनीन्द्रदातृभागी भव, सुरेन्द्रदातृभागी भव, परमराज्यदातृभागी भव, आर्हन्त्यदातृभागी भव, परमनिर्वाणदातृभागी भव।

अनन्तर पुत्र वाली सौभाग्यवती स्त्री द्वारा तेल व सिंदूर में डुबोकर शमी (सोना) वृक्ष की समिधा (सींक) से गर्भिणी पत्नी के केशों की माँग भरी जावे। इसी दिन गोद (खोल) में श्रीफल, मेवा, फल आदि भराकर पति-पत्नी या केवल पत्नी महिलाओं के साथ जिनमंदिर जावें।

**5. पंचम मोद संस्कार**—यह संस्कार गर्भ के दिन से 9वें माह में किया जाता है। इसमें पूर्ववत् यंत्र पूजा व हवन करें। साथ ही नीचे लिखे खास मंत्रों से आहुति व दम्पति को आशीर्वाद दें।

सज्जातिकल्याणभागी भव, सद्गृहस्थकल्याणभागी भव, वैवाहकल्याणभागी भव, मुनीन्द्रकल्याणभागी भव, सुरेन्द्रकल्याणभागी भव, मन्दराभिषेककल्याणभागी भव, युवाराज्यकल्याणभागी भव।

पुण्याहवाचन, शान्ति पाठ आदि के पश्चात् गृहस्थाचार्य पति, पत्नी को णमोकार मंत्र पढ़कर रक्षा सूत्र बाँधें।

**नोट**—यदि गर्भाधान संस्कार क्रमशः न कर सकें तो 4-5वें संस्कारों के साथ उन संस्कारों के मंत्र व क्रियाएँ इसी समय कर ली जावें। गर्भिणी महिला को प्रतिदिन “ओं ह्रीं अर्ह असिआउसा नमः” इस मंत्र की जाप कर लेना चाहिए। उसे गर्भ के पाँचवें माह से, अधिक ऊँची जमीन पर चढ़ना नहीं चाहिए। वह वाहन (बैलगाड़ी, अश्व या धक्के वाली गाड़ी) पर न बैठे। तेज औषधि न लेवें, बोझा न ढोवे, ब्रह्मचर्यपूर्वक रहे, सादा भोजन करें। स्वाध्याय में अधिक समय व्यतीत करें। हाथ चक्की से आटा पीसने का अभ्यास रखे। इन संस्कारों को छोड़कर अन्यत्र हवन में शामिल न हो। क्रोधादि कषाय न कर शान्त परिणाम रखे। पति का भी कर्तव्य है कि वह पत्नी को उक्त कार्यों में सहयोग दें।

**6. छठा प्रियोद्भव संस्कार**—बालक के जन्म के बाद यह संस्कार किया जाता है। जन्म का 10 दिन का सूतक होने से गृहस्थाचार्य या जिनको सूतक

न लगे, वे जिनमंदिर में पूजा-विधान करें। हवन में ‘दिव्य नेमिविजयाय स्वाहा’ परमनेमिविजयाय स्वाहा, आर्हन्त्यनेमिविजयाय स्वाहा, घातिजयो भव, श्रीआदि देव्यः जातक्रियाः कुर्वन्तु, मन्दराभिषेकार्हो भवतु।’ इन मंत्रों से आहुति दें। पिता आदि भी पुत्र को देखकर यह आशीर्वाद दें। इस दिन बाजें बजवावें।

**नोट**—कन्या उत्पन्न होने पर भी पहले बताये समान यथायोग्य संस्कार करें। उसकी उपेक्षा न करें। क्योंकि कन्या रत्न मानी जाती है।

**7. सप्तम नामकर्म संस्कार**—जन्म के 12, 16 या 32वें दिन यह संस्कार करें। दस दिन सूतक होने से जिनाभिषेक, पूजा, शास्त्र का स्पर्श नहीं होता। सूतक त्रिलोकसार, मूलाचार आदि प्राचीन ग्रंथों में भी बताया गया है। सूतक वाले के घर में मुनिराज आहार नहीं लेते हैं।

**नोट**—पुत्र या पुत्री के मूल नक्षत्र में उत्पन्न होने पर जन्म पत्रिका बनाते समय ज्योतिषी अरिष्ट बताते हैं। जैन विधि से उसकी शान्ति निम्न प्रकार करना चाहिए—

**मूल शान्ति**—यदि मूल या उसके समान नक्षत्रों में पुत्र-पुत्री हों तो उस नक्षत्र की शान्ति हेतु निम्नलिखित 101 माला का घर में कोई व्यक्ति या अन्य किसी के द्वारा जप करा लें। यह विधि जन्म से 28वें दिन जब वही नक्षत्र आता है, तब की जाती है। इस दिन चौंसठ ऋद्धि मण्डल विधान पूजा कर लें। इसके तीन-चार दिन पूर्व से जप कर लें।

**जप मंत्र**—ॐ ह्रीं अर्ह असि आ उ सा मूल नक्षत्रोत्पन्न पुत्र-पुत्री संबंधी सर्वारिष्ट निवारणं कुरु कुरु स्वाहा।

घर का प्रसूति स्थान 45 दिन तक अशुद्ध रहता है। 45वें दिन नवजात शिशु को मंदिर ले जावें। वहाँ जिनेन्द्र प्रतिमा के सामने शिशु की माता अपने शिशु को नीचे सुला दें और गृहस्थाचार्य या अन्य कोई व्यक्ति नव बार णमोकार मंत्र उसके कानों में सुनावें। बालक को उसी समय अष्ट मूलगुण (पाँच उदम्बर और तीन मकर का स्थूलरूप से त्याग) धारण कराकर जैन बनावें। इस त्याग की जिम्मेदारी बालक के विवेकशील होने तक माता-पिता एवं परिवार की रहती है।

यदि कोई दिग्म्बर मुनि-आर्यिका आदि गुरुजन विद्यमान हों तो उनके मुखारविंद से णमोकार मंत्र सुनवाएं एवं अष्टमूलगुण भी गुरु से ग्रहण करावें।

**नामकरण**—“सहस्रनामभागी भव, विजयनामाष्टसहस्रभागी भव, परमनामाष्टसहस्रभागी भव।’ इन मंत्रों से आशीर्वाद दिया जावे। अनेक नाम लिखकर किसी से एक चिट उठवाने से भी नाम का निर्णय हो सकता है।

नाम घोषित करने के समय, ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं अमुक बालकस्य नामकरणं करोमि। अयं आयुरारोग्यैश्वर्यवान् भवतु भवतु झ्रौं झ्रौं असि आ उसा स्वाहा।' मंत्र पढ़ा जावे।

**8. अष्टम बहिर्यानि संस्कार**—यह संस्कार लोक में प्रसिद्ध सूर्य-दर्शन (सूरज का मुहूर्त) के समान है। इसमें जैनेतर जनता सूर्य व कूप पूजा आदि करती है। इस क्रिया को जन्म से लगभग 15 से 45 दिन के भीतर कर लेते हैं, जबकि 2, 3 या चौथे माह में किये जाने का शास्त्र में उल्लेख है। इसके आशीर्वाद मंत्र नीचे लिखे अनुसार हैं—

‘उपनयनिष्क्रांतिभागी भव, वैवाहनिष्क्रांतिभागी भव, मुनीन्द्रनिष्क्रांतिभागी भव, सुरेन्द्रनिष्क्रांतिभागी भव, मन्दराभिषेकनिष्क्रांति भागी भव, यौवराज्य-निष्क्रांतिभागी भव, महाराज्यनिष्क्रांतिभागी भव, परमराज्यनिष्क्रांतिभागी भव, आर्हन्त्यनिष्क्रांतिभागी भव।’ बालक को जिनालय में दर्शन कराते समय ‘ॐ नमोऽर्हते भगवते जिनभास्कराय जिनेन्द्र प्रतिमा दर्शने अस्य बालकस्य दीर्घायुष्यं आत्मदर्शनं च भूयात्’ यह मंत्र पढ़ें।

**9. नवमां निषद्या संस्कार**—पाँचवें माह में बालक को बैठाने की क्रिया की जाती है। उस समय पूर्वमुख कर सुखासन में बैठायें। नीचे लिखे आशीर्वादसूचक खास मंत्र पढ़ें—

‘दिव्यसिंहासनभागी भव, विजयसिंहासनभागी भव, परमसिंहासन भागी भव।’

**10. दशवां अन्नप्राशन संस्कार**—जन्म से 7, 8 या नवमें माह में अन्न आहार बालक को कराना चाहिए। इसके पहले अन्न देने से स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ता है। लीवर आदि के रोग इसी के परिणामस्वरूप होते हैं। इसके खास मंत्र ये हैं—

‘दिव्यामृतभागी भव, विजयामृतभागी भव, अक्षीणामृतभागी भव।’

**11. ग्यारहवाँ पादन्त्यास अथवा गमन संस्कार**—इस गमन विधि का उल्लेख आदिपुराण में नहीं है। परन्तु त्रिवर्णाचारादि संस्कार ग्रंथों में इस संस्कार की पूर्ण विधि पाई जाती है। अतएव इस विधि का लिखना भी परमावश्यक है।

यह संस्कार नवमें महीने में किया जाता है। जिस दिन गमन करने योग्य नक्षत्र वार और योग हो, उसी दिन यह संस्कार करना चाहिए।

प्रथम ही बालक का पिता पहले के समान श्री जिनेन्द्रदेव की पूजा तथा होम के बालक को वस्त्रालंकारों से विभूषित करें। उस मंडप में किनारे-किनारे चारों ओर एक धुला हुआ वस्त्र इस प्रकार बिछावे कि जिसमें वेदी तथा श्रावकादि सज्जनजनों के बैठने

का स्थान बीच में आ जाये अर्थात् वेदी और सज्जनों के बैठने का स्थान के चों ओर परिक्रमारूप से वह वस्त्र बिछावे। यह वस्त्र पूर्व दिशा की ओर से बिछाना प्रारंभ के और दक्षिण उत्तर पश्चिम की ओर होता हुआ पूर्व दिशा में ही समाप्त करे।

अनन्तर पिता उस बालक के दोनों हाथों पकड़ अग्निकुण्ड की पूर्व दिशा में उत्तर दिशा की ओर मुख कराकर उस बालक को उस बिछे हुए वस्त्र पर खड़ा करे तथा “ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते महावीराय चतुस्त्रिंशदतिशय-युक्ताय युक्ताय बालकस्य पादन्त्यासं शिक्षयामि तस्य सौख्यं भवतु भवतु इवीं क्ष्वीं स्वाहा” यह मंत्र पढ़कर उस बालक का दायां पैर आगे बढ़ावे। फिर इसी प्रकार उस बालक के दोनों हाथ पकड़े हुए उसी वस्त्र पर उसे चलाता जाये। पूर्व दिशा समाप्त होने पर दक्षिण की ओर मुड़ जाये। दक्षिण से पश्चिम उत्तर की ओर होता हुआ फिर पूर्व की ओर आ जाये।

इसी प्रकार तीन प्रदक्षिणा करा देवे। ध्यान रहे कि प्रदक्षिणा देते समय अग्निकुण्ड बालक के दायें हाथ की ओर रहेगा।

प्रदक्षिणा दे चुकने पर बालक से श्री जिनेन्द्रदेव को नमस्कार करावे तथा अग्निगुरु और वृद्धजनों को भी नमस्कार करावे।

**12. बारहवाँ वर्ष वर्धन (व्युष्टि) संस्कार**—यह क्रिया बालक के एक वर्ष का होने पर करें। इस दिन मंदिर में पूजा विधान करावें। बालक को मंदिर भेजें। उसका जन्म दिवस मनावें। बालक को इन मंत्रों से आशीर्वाद दें।

“उपनयन जन्मवर्षवर्द्धनभागी भव, वैवाहनिष्ठवर्धनभागी भव, मुनीन्द्रजन्म-वर्षवर्धनभागी भव, सुरेन्द्रजन्मवर्षवर्धनभागी भव, मन्दराभिषेकवर्षवर्धनभागी भव, यौवराज्यवर्षवर्धनभागी भव, महाराज्यवर्षवर्धनभागी भव, परमराज्यवर्षवर्धनभागी भव, आर्हन्त्यराज्यवर्षवर्धनभागी भव।’

**13. तेरहवाँ चौल संस्कार**—यह बालक के पाँच वर्ष पूर्ण होने पर होता है। दो-तीन वर्ष में भी यह क्रिया की जा सकती है। कहीं-कहीं 45 दिन में भी मुण्डन कराने की परंपरा है तथा कुछ परिवारों में 1वर्ष के अंदर ही बच्चे का मुण्डन करा लेते हैं एवं कहीं-कहीं तीर्थों पर ले जाकर भी मुण्डन कराते हैं, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ पर बच्चों के मुण्डन कराने से उनकी विद्या, बुद्धि का खूब विकास होता है। इसके मुहूर्त सोम, बुध, शुक्रवार, 2, 3, 5, 7, 10, 11, 13 तिथि, ज्येष्ठा, मृगशिरा, चित्रा, रेवती, हस्त, स्वाति, पुनर्वसु, पुष्य, धनिष्ठा, शतभिषा, अश्विनी नक्षत्र हैं। खास आशीर्वाद मंत्र नीचे लिखे अनुसार हैं—

‘उपनयन मुँडभागी भव, निर्ग्रथमुँडभागी भव, निष्क्रांतिमुँडभागी भव, परमनिस्तारककेशभागी भव, सुरेन्द्रकेशभागी भव, परमराज्य केश भागी भव, आर्हन्त्य-केशभागी भव।’ केश निकल जाने के बाद चोटी के स्थान पर केशर से स्वस्तिक बनावें। इसी समय कर्णछेदन क्रिया भी करते हैं।

**14. चौदहवाँ लिपि संख्यान संस्कार**—यह पाँच वर्ष पूर्ण होने पर घर में या पाठशाला में सोम, बुद्ध, शुक्र, शनिवार, हस्त, अश्विनी, पुनर्वसु, पुष्य, चित्रा, अशुषा नक्षत्र में तथा 2, 3, 5, 6, 10, 11, 12 तिथि के मुहूर्त में करें। जिन मंदिर में या घर पर पूजा के बाद यह क्रिया करें। सर्वप्रथम “ॐ और ॐ नमः सिद्धेभ्यः” बालक से पीछे पर लिखावें और इनका उच्चारण करावें। आशीर्वाद के विशेष मंत्र निम्न प्रकार हैं—

‘शब्दपारगामी भव, अर्थपारगामी भव, शब्दार्थसंबंधपारगामी भव।’ बालक को लिपि पुस्तक दी जावे।

**नोट**—वर्तमान में 2-3 वर्ष के बालक पर भी यह संस्कार कराये जाते हैं क्योंकि बच्चों को अब 2-3 वर्ष की उम्र में स्कूल भेजे जाने की परम्परा हो गई है।

**15. पन्द्रहवाँ उपनयन संस्कार**—आठ वर्ष की उम्र के बालकों में यह यज्ञोपवीत संस्कार रवि, सोम, बुध, गुरु, शुक्रवार, हस्त, अश्विनी, पुनर्वसु, पुष्य, उत्तरात्रय, रोहिणी, आश्लेषा, स्वाति, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, मूल, रेवती, मृगशिरा, चित्रा अनुराधा, आर्द्रा, पूर्वात्रय इन वार व नक्षत्रों में करें। रक्षाबंधन के दिन भी सांस्कृतिक रूप में यह क्रिया की जाती है। इसके आशीर्वाद मंत्र इस प्रकार हैं—

‘परमनिस्तारकलिंगभागी भव, परमर्षिलिंगभागी भव, परमेन्द्रलिंगभागी भव, परमराज्यलिंगभागी भव, परमार्हन्त्यलिंगभागी भव, परमनिर्वाणलिंगभागी भव।’

**यज्ञोपवीत पहनने का मंत्र**—ॐ नमः परमशांताय शान्तिकराय पवित्रीकृताहं रत्नत्रयस्वरूपं यज्ञोपवीतं दधामि मम गात्रं पवित्रं भवतु अहं नमः स्वाहा।

**यज्ञोपवीत का उद्देश्य**—अष्टमूलगुण (स्थूल रूप से पाँच पाप का त्याग और मद्य, मांस, मधु का त्याग) अभ्यासरूप में विद्याभ्यास के काल में ग्रहण कर उनके चिन्हरूप में यज्ञोपवीत धारण करना है।

**16. सोलहवाँ व्रतावतरण संस्कार**—पहले गुरुकुल (ब्रह्मचर्याश्रम) में विद्यार्थी ब्रह्मचर्यपूर्वक रहकर विद्याभ्यास करते थे। विवाह के पूर्व अध्ययन पूर्ण होने तक सादा भोजन और सादगीपूर्ण रहन-सहन व्रत चर्या का उद्देश्य है।

अध्ययन पूर्ण होने पर विद्यार्थी अभ्यासरूप में लिये गये पूर्ण नियम और उनका चिन्ह उतारकर गुरु व माता-पिता की आज्ञा से विवाह के लिए तैयार होता है। उक्त व्रतों में अष्टमूलगुण सदा पालता है क्योंकि यह जैन का चिन्ह है।

## जैन विवाह विधि

**विवाह और उसका उद्देश्य**—शास्त्र की विधि के अनुसार योग्य उम्र के वर और कन्या का अपनी-अपनी जाति में क्रमशः वाग्दान (सगाई) प्रदान, वरण, पाणिग्रहण होकर अन्त में सप्तपदीपूर्वक विवाह होता है। यह विवाह धर्म की परम्परा को चलाने के लिए, सदाचरण और पुत्र-पुत्री द्वारा कुल की उन्नति के लिए और मन एवं इन्द्रियों के असंयम को रोककर मर्यादापूर्वक ऐन्द्रियिक सुख की इच्छा से किया जाता है क्योंकि पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन अल्प शक्ति रखने वाले स्त्री-पुरुषों से नहीं हो सकता इसलिए आचार्यों ने ब्रह्मचर्याणुव्रत में पर-स्त्री त्याग और स्व-स्त्री संतोष का उपदेश दिया है। यह विवाह देव, शास्त्र, गुरु की साक्षी से समाज के समक्ष होता है, जो जीवनपर्यन्त रहता है।

**गठजोड़ा**—हवन और सप्तपदी पूजा के बाद जीवनपर्यन्त पति-पत्नी बनने वाले दम्पति में परस्पर प्रेमभाव एवं लौकिक और धार्मिक कार्यों में साथ रहने का सूचक ग्रंथिबंधन (गठजोड़ा) किसी सौभाग्यवती (सुहागिनी) स्त्री के द्वारा कसा चाहिए। कन्या की लुगड़ी (साड़ी) के पल्ले में 1 चवन्नी, 1 सुपारी, हल्दी गाँठ, सरसों व पुष्प रखकर उसे बाँध लें और उससे वर के दुपट्टे के पल्ले को बाँध दें।

**ग्रंथिबंधन मंत्र**—

अस्मिन् जन्मन्येष बन्धो द्वयोर्वै, कामे धर्मे वा गृहस्थत्वभाजि।

योगो जातः पंचदेवाग्नि साक्षी, जायापत्न्योरंचलग्रंथिबंधात्।।

**पाणिग्रहण**—गठजोड़ा के पश्चात् कन्या के पिता कन्या के बाएँ हाथ में और वर के सीधे हाथ में पिसी हुई हल्दी को जल से रकाबी में घोलकर लेपें। लोक में जो पीले हाथ करने की बात कही जाती है यह वही बात है। फिर वर के सीधे हाथ में थोड़ी-सी गली मेंहदी और 1 चवन्नी रखकर उस पर कन्या का बायाँ हाथ रखकर कन्या का हाथ ऊपर व वर का हाथ नीचे करके वर-कन्या के दोनों हाथ जोड़ दें। इस विधि से कन्या का पिता अपनी कन्या को वर के हाथ में सौंपता है। इसे पाणिग्रहण कहते हैं।

**पाणिग्रहण मंत्र**—

हारिद्रंपंकमवलिप्य सुवासिनीभिर्दत्तं द्वयोजनकयोः खलु तौ गृहीत्वा।

वामं करं निजसुताभवमग्रपाणिम्, लिम्पेद्वरस्य च करद्वयोजनार्थम्।।

गृहस्थाचार्य प्रत्येक फेरे के बाद नीचे लिखहुए अर्घ्य क्रमशः चढ़ाते रहें—

1. ॐ ह्रीं सज्जाति परमस्थानाय अर्घ्यम्।
2. ॐ ह्रीं सदगृहस्थ परमस्थानाय अर्घ्यम्।
3. ॐ ह्रीं पारिव्राज्य परमस्थानाय अर्घ्यम्।
4. ॐ ह्रीं सुरेन्द्र परमस्थानाय अर्घ्यम्।
5. ॐ ह्रीं साम्राज्य परमस्थानाय अर्घ्यम्।
6. ॐ ह्रीं आर्हन्त्य परमस्थानाय अर्घ्यम्।

**फेरे और सप्तपदी**—हथलेवा के बाद वर-कन्या को खड़ा करा के कन्या को आगे और वर को पीछे रखकर वेदी में चवरी के मध्य में यंत्र सहित कटनी और हवन की प्रज्ज्वलित अग्नियुक्त स्थंडिल के चारों ओर छः फेरे दिलवावें। बुन्देलखण्ड के परवार आदि जातियों में वर-वधू का हाथ छुड़वाकर छह फेरे दिलाये जाते हैं। इस समय स्त्रियाँ फेरों के मंगल गीत गावें। वर और कन्या के कपड़ों को संभालते हुए फेरे दिलाना चाहिए। एक-दो समझदार स्त्री और पुरुष दोनों को संभालते रहें। छः फेरों के बाद दोनों अपने पूर्व स्थान पर पहले के समान बैठ जावें। गृहस्थाचार्य निम्न प्रकार सात-सात वचनों (प्रतिज्ञाओं) को क्रम से पहले वर से और फिर कन्या से कहलावें, साथ ही स्वयं उनको सरल भाषा में समझाते जायें।

#### वर की ओर से कन्या के प्रति 7 वचन—

1. मेरे कुटुम्बी लोगों का यथायोग्य विनय सत्कार करना होगा।
  2. मेरी आज्ञा का लोप नहीं करना होगा ताकि घर में अनुशासन बना रहे।
  3. कठोर वचन नहीं बोलना होगा क्योंकि इससे चित्त को क्षोभ होकर पारस्परिक द्वेष की संभावना रहती है।
  4. सत्पात्रों के घर आने उन्हें आहार आदि प्रदान करने में क्लुषित मन नहीं करना होगा।
  5. मनुष्यों की भीड़ आदि में जहाँ धक्का आदि लगने की संभावना हो, वहाँ बिना खास कारण के अकेले नहीं जाना होगा।
  6. दुराचारी और नशा करने वाले लोगों के घर पर नहीं जाना होगा, क्योंकि ऐसे व्यक्तियों द्वारा अपने सम्मान में बाधा आने की संभावना है।
  7. रात्रि के समय बिना पूछे दूसरों के घर नहीं जाना होगा ताकि लोगों को व्यर्थ ही टीका-टिप्पणी करने का मौका न मिले।
- ये सात प्रतिज्ञायें तुम्हें स्वीकार करना चाहिए। इन वचनों में गार्हस्थ्य

जीवन को सुखद बनाने की बातों का ही उल्लेख है। इनके पालन से घर में और समाज में पत्नी का स्थान आदरणीय बनेगा।

इन प्रतिज्ञाओं को कन्या अपने मुँह से निःसंकोच होकर कहे और स्वीकार के वर-वधू के लिए महत्वपूर्ण 7 प्रतिज्ञाएँ—

1. जीवनपर्यन्त साथ रहते हुए सहनशील और कर्मवीर बनकर एक-दूसरे के लिए जीवित रहना-जीवन से निराश न होना।
  2. दाम्पत्य जीवन को सुखी बनाने और गृहस्थजीवन के निर्माण में भीतर का उत्तरदायित्व नारी को और बाह्य जीवन का उत्तरदायित्व पुरुष पर है।
  3. एक-दूसरे के परिवार के सदस्य बनकर सबके स्नेह और आदर के पात्र बनना। विनय, सेवा करना एवं सद्व्यवहार से घर और ससुराल को स्वर्ग बनाना।
  4. परस्पर स्नेह, अभिन्नता, आकर्षण, विश्वास बना रहे, इसके उपाय आचरण में लाना। पति के लिए पत्नी सर्वाधिक सुन्दर व प्रिय और पत्नी के लिए पति परमाराध्य रहे।
  5. वधू को कुल वधु (सीता, अंजना, सुलोचना आदि के समान) और वर को कुलपुत्र (राम, जयकुमार, सुदर्शन आदि के समान) बनना जिनसे घर का सम्मान, गौरव, प्रतिष्ठा, कीर्ति बनी रहे वैसे काम करना। निर्व्यसनी, शीलवान और विवेकी बनना।
  6. जिनेन्द्र देव, गुरु, शास्त्र की अर्चना एवं साक्षीपूर्वक विवाह सम्पन्न हो रहा है उनमें श्रद्धा बनाये रखें, इससे बुराइयों से बचने में बल मिलता रहे। आत्महित (वीतरागता) की ओर दृष्टि रखें।
  7. समाज, जनता और राष्ट्र की सेवा में दोनों परस्पर सहयोग से आगे बढ़ें। विलासिता से बचें।
- इन सात प्रतिज्ञाओं को दोनों स्वीकार करें। इनके सिवा और भी कोई खास बात हो तो विवाह के पहले स्पष्ट कर लेना चाहिए। जिससे दाम्पत्य जीवन आजीवन आनन्दपूर्वक व्यतीत हो। सच यह है कि अपने साफ और शुद्ध परिणाम से ही संबंध अच्छा रह सकता है।
- सप्तपदी के पश्चात् वर को आगे करके सातवाँ फेरा कराया जाये और अपने पहले के स्थान पर जब आवें तब वे पति-पत्नी के रूप में होकर यानि स्त्री-पतिके बाँयें ओर पति-स्त्री के दाहिने ओर बैठे। इस अवसर पर स्त्रियाँ मंगलगीत गावें। उक्त सात फेरे या भाँवर सात परम स्थानों की प्राप्ति के द्योतक हैं। आगमानुसार

संसार में (1) सज्जातित्व (2) सद्गृहस्थत्व (3) साधुत्व (4) इन्द्रत्व (5) चक्रवर्तित्व (6) आर्हत्य और (7) निर्वाण ये सात परम स्थान माने गये हैं।

**सातवें फेरे में यह मंत्र बोलें और अर्घ्य चढ़ावें।**

**‘ॐ ह्रीं निर्वाण परमस्थानाय अर्घ्यं’**

सात फेरे होने पर गृहस्थाचार्य नवदम्पति पर निम्न प्रकार मंत्र द्वारा पुष्प क्षेपण करें—

ॐ हां ह्रीं हूं ह्रीं हः अ सि आ उ सा अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसाधवः शान्तिं पुष्टिं च कुरुत कुरुत स्वाहा।

यहाँ पर संक्षेप में गृहस्थ जीवन के महत्व पर उपदेश देकर अच्छी संस्थाओं को यथाशक्ति दोनों पक्ष की ओर से दान की घोषणा कराकर यथास्थान भिजवाने का प्रबंध करा देना चाहिए।

इसके बाद कन्या पक्ष की ओर से वर को तिलकपूर्वक कुछ राशि और श्रीफल भेंटकर गठबंधन छुड़ा देना चाहिए।

**विशेष ज्ञातव्य—**

1. विवाह के दिन कन्या के रजस्वला हो जाने पर कन्या से पाँचवें दिन पूजन-हवन आदि विवाह की विधि कराना चाहिए। विवाह दिन में किया जाना चाहिए।

2. नवदेवता पूजन में अर्हत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, सर्व साधु, जिनधर्म, जिनागम, जिनचैत्य और जिनालय ये 9 देवता हैं।

3. गुरु पूजा में ऋद्धियों की स्थापना के लिए “ॐ बुद्धिचारण विक्रियौषध-तपोबलरसाक्षीणमहानसचतुःषष्टि ऋद्धिभ्यो नमः” यह मंत्र कागज पर केसर से लिखकर नीचे की कटनी पर रख देना चाहिए।

4. विवाह के मुहूर्त निकालने आदि में और अन्य ग्रहादिदोष को दूर करने के लिए जो पीली (गुरु ग्रह संबंधी) पूजा, लाल (रवि ग्रह संबंधी) पूजा आदि शांति के उपाय अन्य ज्योतिषी बताते हैं उनके उपाय जैनशास्त्रानुसार ही करना चाहिए। नवग्रह विधान के अनुसार विवाह के समय जिनेन्द्र पूजा करा देना चाहिए और विशेष करना हो तो नवग्रह मण्डल मंडवाकर “ॐ ह्रीं अर्हम् अ सि आ उ सा सर्वविघ्न शांतिं कुरु कुरु स्वाहा” इस मंत्र की ग्रह के हिसाब से यथाशक्ति जाप व विवाह के समय आहुति करा देना चाहिए।

**नव दम्पति के प्रति—**आप दोनों गार्हस्थ जीवन में प्रविष्ट हुए हैं। अपने मानव जीवन को पवित्र और सफल बनाने के लिए ही यह क्षेत्र आपने चुना है।

इसको आनन्दपूर्ण और सुखमय बनाना आपके ही ऊपर निर्भर है। यह केवल इन्द्रिय भोग भोगने के लिए नहीं, वरन् संयमपूर्वक सदाचार और शील की साधना के उद्देश्य से आपने अंगीकार किया है। आप दोनों एक-दूसरे के प्रति तो जवाबदार हैं ही, पर स्व-धर्म, स्व-समाज की और स्व-देश की सेवा का दायित्व भी आप पर आ पड़ा है। यह गृहस्थ का भार बहुत बड़ा और अनेक संकटों से युक्त है। गृहस्थ अवस्था में आने वाली अनेक आपत्तियों से घबराकर गृह-विरत हो जाने के बहुत उदाहरण मिलेंगे परन्तु हमें आशा है कि आप जीवन की हरेक परीक्षा में उत्तीर्ण होंगे। समस्त कठिनाइयों को सहन करते हुए उत्तरोत्तर प्रगतिपथ पर दृढ़ रहना आपका कर्तव्य होगा।

पुराणों में उल्लिखित जयकुमार-सुलोचना, राम-सीता या अन्य किसी के दाम्पत्य जीवन के आदर्श को आप अपने सामने रखें। हमारी यह शुभकामना है कि उन्हीं के समान भावी पीढ़ी आपका भी उदाहरण अपने समक्ष रखें।

आप दोनों यौवन के वेग में न बहकर अपने कुल के सम्मान का ख्याल रखते हुए गौरवमय यशस्वी जीवन व्यतीत करें। आपका व्यवहार न्याय एवं नैतिकतापूर्ण हो।

पति का कर्तव्य है कि वह अपनी पत्नी को सहयोगिनी मानकर उसे ऊँचा उठाने के साधन सदा जुटाता रहे और पत्नी-पति के हर कार्य को सफल बनाने में पूरा योग देती रहे। दोनों भौतिकता में न लुभाकर आध्यात्मिकता के रहस्य को भी समझें, इसी में उन्हें यथार्थ सुख और शांति प्राप्ति होगी। इसके लिए प्रतिदिन देवदर्शन, गुरुदर्शन, पूजन, सामायिक और स्वाध्याय भी आवश्यक है। हमारी हार्दिक मंगल-कामना है कि आपकी यह जोड़ी दीर्घकाल तक बनी रहे।

**विवाह के पश्चात्—**जो स्त्री-पुरुष विवाह करते हैं, उन्हें गार्हस्थ जीवन के महत्व को समझकर संयम के साथ धर्म, अर्थ और काम पुरुषार्थ को परस्पर अविरोध रूप से सेवन करना चाहिए। अपनी आजीविका के साधन जुटाते हुए न्यायपूर्वक अर्थोपार्जन करना भी गृहस्थ का कर्तव्य है। अर्थ के बिना लोक यात्रा नहीं चल सकती परन्तु अर्थ के पीछे पड़कर धर्म को नहीं छोड़ना चाहिए। जीवन में सदाचार और प्रामाणिकता का बड़ा महत्व है। चाहे युवा, प्रौढ़ या वृद्ध अवस्था कोई भी हो, उसमें इस लोक की सफलता का और परलोक का ध्यान अवश्य रखना चाहिए। जीवन के साथ मरण तो अवश्यभावी है। मरण अच्छा उसी का होता है जिसका जीवन अच्छा रहा हो। मृत्यु मालूम नहीं कब आ जावे, इसलिए

हमेशा सावधान रहना चाहिए। जीवन आनन्दपूर्वक व्यतीत करते हुए निराकुलता का भी अनुभव किया जावे, जिससे पापों से बचकर शुभोपयोग का वातावरण उपलब्ध हो सके। विदेश में लोग विवाह करना अच्छा नहीं समझते, बिना विवाह किये वर्षों तक वे अनेक अविवाहित महिलाओं के साथ मित्रता के रूप में रहते हैं। बिना विवाह किये पुरुष और महिला के साथ में रहने से वहाँ ब्रह्मचर्य का व्यवहार नहीं है। संयुक्त परिवार की प्रथा वहाँ नहीं होने से वृद्धावस्था में कोई सहारा नहीं रहता। विवाह करके भी वहाँ तलाक होता रहता है। इसलिए भारत के आदर्श का विचार कर यदि ब्रह्मचर्यपूर्वक नहीं रह सकते तो विवाह करके एक पत्नी व्रत पालने में ही सुख और शांति मिलेगी। अपने वृद्ध माता-पिता की सेवा में कृतज्ञताप्रगट करने का भी कम महत्व नहीं है क्योंकि भविष्य में हमें भी वृद्ध और रोगी बन्कर अपने पुत्रों से अपेक्षा रखना है।

व्यक्तिगत जीवन जीने के बजाय समाज और जनता के संपर्क में भी आना चाहिए। अपनी शक्ति अनुसार समाज सेवा और जनता की सेवा करते रहकर यशस्वी बनना चाहिए, ताकि लोग सदैव याद करते रहें।



## श्रावक की षट् आवश्यक क्रियाएँ

जो पुरुष<sup>1</sup> देवपूजा, गुरु की उपासना, स्वाध्याय, संयम, तप और दान इन षट्कर्मों के करने में तल्लीन रहता है, जिसका कुल उत्तम है, वह चूली, उखली, चक्की, बुहारी आदि गृहस्थ की नित्य षट् आरंभ क्रियाओं से होने वाले पाप से मुक्त हो जाता है तथा वही उत्तम श्रावक कहलाता है।

जो भव्य बिंबाफल के समान वेदी बनवाकर उसमें जौ प्रमाण प्रतिमा विराजमान करता है, वह मुक्ति को समीप कर लेता है।

पूर्व या उत्तर दिशा की तरफ मुख करके और तिलक लगाकर जिनपूजन करना चाहिए।

शुद्ध<sup>2</sup> जल, इक्षुरस, घी, दूध, दही, आम्ररस, सर्वौषधि और कल्कचूर्ण आदि से भाव भक्तिपूर्वक भगवान जिनेन्द्र का अभिषेक करना चाहिए।

खण्डित वस्त्र, गला हुआ, फटा और मैला वस्त्र पहनकर दान-पूजन, होम और स्वाध्याय नहीं करना चाहिए क्योंकि ऐसे खंडित आदि वस्त्रों को पहनकर पूजन करने से उसका फल नहीं मिलता है।

**प्रश्न**—पुष्प, धूप, दीप, फल आदि सचित्त द्रव्यों से भगवान की पूजा करने से पाप संभव है?

**उत्तर**—जो जिनपूजा असंख्य भवों के पापों को नष्ट करने में समर्थ है, उस पूजा से क्या यत् किंचित् पूजन के निमित्त से होने वाले सावद्य पाप नष्ट नहीं होंगे? अवश्य हो जायेंगे। हाँ! इतना अवश्य है कि प्रत्येक कार्यो में यत्नाचारपूर्वक प्रवृत्ति होनी चाहिए।

'कुटुम्ब पोषण और भोगोपभोग के लिए किया गया आरंभ पाप उत्पन्न करने वाला होता है परन्तु दान, पूजा आदि धर्म कार्यो में किया गया आरंभ पाप बंध के लिए नहीं होता है।'<sup>3</sup>

जो<sup>4</sup> मनुष्य धनिया के पत्र बराबर जिनभवन बनवाकर उसमें सरसों के

1. देवपूजादिषट्कर्मनिरतः कुलसत्तमः।  
आद्यषट्कर्मनिर्मुक्तः श्रावकः परमो भवेत्॥ 94॥ उमास्वामी श्रावका. पृ. 35
2. शुद्धतोयेक्षुसर्पिर्भिर्दुग्धदध्याम्रजैः रसैः।  
सर्वौषधिभिरुच्चूर्णैर्भावात् संस्नापयेज्जिनम्॥134॥ उमा. श्राव. पृ. 53
3. उमास्वामी श्रावकाचार, पृ. 57। 4. वसुनन्दिश्रावकाचार, पृ. 145।

बराबर भी जिन प्रतिमा की स्थापना करता है, वह तीर्थकर पद पाने के योग्य पुण्य को प्राप्त करता है, तब जो कोई अति उन्नत और परिधि, तोरण आदि से संयुक्त जिनेन्द्र भवन बनवाता है, उसका समस्त फल वर्णन करने के लिए कौन समर्थ हो सकता है?

पूजन के समय जिन भगवान के आगे जलधारा को छोड़ने से पापरूपी मैल का क्षालन होता है।

चन्दन के चर्चन से मनुष्य सौभाग्य से सम्पन्न होता है।

अक्षतों से पूजा करने वाला मनुष्य अक्षय नौ निधि और चौदह रत्नों का स्वामी चक्रवर्ती होता है। अक्षीण लब्धि से सम्पन्न होकर अंत में मोक्ष सुख को पाता है।

पुष्पों से पूजा करने वाला मनुष्य कमल के समान सुन्दर मुख वाला, पुष्पों की सुन्दर मालाओं से समर्चित देह वाला कामदेव होता है।

नैवेद्य के चढ़ाने से शक्तिमान, कान्ति और तेज से सम्पन्न, अति सुन्दर होता है।

दीपों से पूजा करने वाला मनुष्य, केवलज्ञानरूपी प्रदीप के तेज से समस्त जीवादि तत्त्वों के रहस्य को प्रकाशित करने वाला केवली होता है।

धूप से पूजा करने वाला मनुष्य त्रैलोक्यव्यापी यश वाला होता है।

फलों से पूजा करने वाला परम निर्वाणरूप फल को प्राप्त कर लेता है।

जिनमंदिर में घण्टा समर्पण करने से घण्टाओं के शब्दों से व्याप्त श्रेष्ठ सुरविमानों में जन्म लेता है।

मंदिर में छत्र प्रदान करने से पृथ्वी को एकछत्र भोगता है।

चमरों के प्रदान से उस पर चमर ढोरे जाते हैं।

जिन भगवान का अभिषेक करने से मनुष्य सुदर्शनमेरु पर क्षीरसागर के जल से इन्द्रों द्वारा अभिषेक को प्राप्त करता है।

जिनमंदिर में विजय पताकाओं के देने से सर्वत्र विजयी षट्खण्डाधिपति चक्रवर्ती होता है।

अधिक कहने से क्या? जिन पूजन के फल से संसार के सभी अभ्युदय प्राप्त हो जाते हैं और परम्परा से मुक्ति को भी प्राप्त कर लेता है।

इस प्रकार से संक्षेप में 'देवपूजा' नाम की आवश्यक क्रिया का वर्णन हुआ।

## गुरु की उपासना

“अपने<sup>1</sup> मनोवांछित पदार्थ सिद्ध करने के लिए तथा इस लोकसंबंधी समस्त संशयरूप अंधकार का नाश करने के लिए एवं परलोक में सुख प्राप्त करने के लिए गुरु की सेवा सदा करते रहना चाहिए।”

उत्तम, मध्यम, जघन्य कैसे ही मनुष्य हों परन्तु बिना गुरु के वे मनुष्य नहीं कहलाते, इसलिए प्रत्येक मनुष्य को सर्वोत्कृष्ट गुरु की सेवा अवश्य करते रहना चाहिए।

“गुरु<sup>2</sup> भक्तिरूपी संयम से श्रावक घोर संसार समुद्र को पार कर लेते हैं और अष्ट कर्मों का छेदन कर देते हैं पुनः जन्म-मरण के दुःखों से छूट जाते हैं।”

## स्वाध्याय

स्वाध्याय भव्य जीवों को ज्ञान देने वाला है, उसके पाँच भेद हैं—वाचना—पढ़ना-पढ़ाना। पृच्छना—प्रश्न करना। अनुप्रेक्षा—पढ़े हुए का बार-बार चिंतवन करना। आमनाय—शुद्ध पाठ रटना और धर्मोपदेश—धर्म का उपदेश देना।

## संयम

इन्द्रिय और मन पर नियंत्रण करना और जीवदया पालना संयम है। संयम के दो भेद हैं—इन्द्रिय संयम और प्राणिसंयम।

पंचेन्द्रिय के विषयों का त्याग करना और मन को वश में रखना इन्द्रिय संयम है पाँच स्थावर और त्रसकाय ऐसे षट्काय के जीवों की दया पालना प्राणिसंयम है

## तप

कर्म निर्जरा के लिए किया गया तपश्चरण 'तप' कहलाता है। तप के दो भेद हैं—बाह्य और आभ्यन्तर।

बाह्य तप के छह भेद हैं—अनशन—उपवास करना, अवमौदर्य—भूख से कम खाना, व्रतपरिसंख्यान—घर, गली अथवा अन्य पदार्थों का नियम करके आहार ग्रहण करना, रसपरित्याग—घी, दूध आदि रसों में एक, दो या सभी रसों का त्याग करना।

1. 'गुरुसेवा विधातव्या मनोवांछितसिद्धये। संशयध्वान्तानाशार्थमिहामुत्र सुखाय च'।।183।। उमा.श्रा.पृ. 71।
2. 'गुरुभक्तिसंजमेण य तरति संसारसायरं घोरं। छिण्णाति अट्टकम्मं जम्मणमरणं ण पावेति'।।

**विविक्त शय्यासन**—एकान्त स्थान में या गुरु के सानिध्य में शयन आसन करना।  
**कायक्लेश**—कुक्कुट आसन, पद्मासन, खड्गासन, प्रतिमायोग आदि से ध्यान करना।

अभ्यन्तर तप के छह भेद हैं—

**प्रायश्चित्त**—व्रत आदि में दोष लग जाने से गुरु से उसका दण्ड लेना।

**विनय**—रत्नत्रयधारकों की विनय करना, **वैयावृत्य**—आचार्य, उपाध्याय, साधु आदि व्रतीजनों की सेवा करना, **स्वाध्याय**—शास्त्रों का पठन-पाठन आदि करना, **व्युत्सर्ग**—पापों के कारणरूप उपधि—परिग्रह का त्याग करना, **ध्यान**—पिण्डस्थ, पदस्थ, रूपस्थ, रूपातीत आदि प्रकार से ध्यान करना।

इन बारह प्रकार के तपों का एकदेशरूप से शक्ति के अनुसार श्रावकों को भी अनुष्ठान करना चाहिए। मुख्यतया इसका अनुष्ठान मुनियों में ही होता है।

## दान

स्वपर के अनुग्रह के लिए धन का त्याग करना दान है।

**दान के चार भेद हैं**—आहारदान, ज्ञानदान, औषधिदान, अभयदान।

उत्तम आदि पात्रों में इन चारों दानों को देना उत्तम दान है।

इस प्रकार से जो गृहस्थ श्रावक नित्यप्रति षट् आवश्यक क्रियाओं को आदरपूर्वक करता है, वह चक्की, उखली, चूल्ही, बुहारी और जल भरना, गृहारम्भ के इन पाँच पापों से और द्रव्य कमाना इस छठे पाप से अर्थात् षट् आरंभजनित पापों से छूट जाता है।

इस तरह उमास्वामी श्रावकाचार के अनुसार इन छट् आवश्यक क्रियाओं का वर्णन किया है।

श्री कुन्दकुन्द स्वामी रयणसार<sup>1</sup> में कहते हैं कि—

सुपात्र को चार प्रकार का दान देना और श्री देवशास्त्रगुरु की पूजा करना श्रावकधर्म में श्रावक के ये दो कर्तव्य प्रमुख हैं, इन दो कर्तव्यों के बिना श्रावक नहीं हो सकता है, वैसे ही मुनियों के कर्तव्यों में ध्यान और अध्ययन ये दो कर्तव्य मुख्य हैं, इन दो कार्यों के बिना मुनि, मुनि नहीं हो सकता है।

पूजा के फल से यह मनुष्य तीनों लोकों में पूज्य हो जाता है और सुपात्र दान के फल से तीनों लोकों में सारभूत उत्तम सुखों को भोगता है।

**भोजन**—आहारदान देने मात्र से ही श्रावक धन्य कहलाता है तथा पंचाश्वर्य को प्राप्त होता हुआ देवताओं से पूज्य होता है।<sup>1</sup> एकमात्र जिनलिंग को देखकर आहार दान देना चाहिए, उस समय पात्र-अपात्र की परीक्षा करने से क्या प्रयोजन?

“जो भव्यजीव मुनीश्वरों के आहारदान के पश्चात् अवशेष अन्न को प्रसाद समझकर सेवन करता है, वह संसार के सारभूत उत्तम सुखों को प्राप्त होता है और क्रम से मोक्ष को प्राप्त करता है, ऐसा श्री जिनेन्द्र देव ने कहा है।”<sup>2</sup>

“इस भरत क्षेत्र के अवसर्पिणी के पंचम काल में श्री मुनीश्वरों को प्रमाद रहित धर्मध्यान होता है, ऐसा जिनवचन है, जो नहीं मानता है, वह मिथ्यादृष्टि है।”<sup>3</sup>

“आज भी रत्नत्रय से शुद्ध साधु आत्मा का ध्यान करके इन्द्रपद को और लौकान्तिक पद को प्राप्त कर लेते हैं पुनः वहाँ से च्युत होकर मोक्ष चले जाते हैं अर्थात् एक भवावतारी हो जाते हैं।”<sup>4</sup>

‘श्रीदेवसेन’ विरचित भावसंग्रह में पंचम गुणस्थान के प्रकरण में शिक्षाव्रतों का वर्णन करते हुए सामायिक व्रत का वर्णन किया है कि—

“तीनों<sup>5</sup> कालों में अरहन्त भगवान की स्तुति करना, पर्व में प्रोषधोपवास करना, अतिथियों को दान देना और मरण के अंत में सल्लेखना ग्रहण करना।”

श्री वामदेव विरचित भावसंग्रह में पंचम गुणस्थान का वर्णन करते हुए व्रत प्रतिमा के लक्षण में शिक्षाव्रत में प्रथम सामायिक विधि का वर्णन निम्न प्रकार से किया है—

“प्रतिदिन<sup>6</sup> तीनों कालों में श्रावक जिनपूजापूर्वक सामायिक करें” क्योंकि—

1. दाणं भोयणमेत्तं दिण्णइ धण्णो हवेइ सायारो।  
पत्तापत्तविसेसं सदंसणे किं वियारेण।।15।। रयणसार।
2. जो मुणिभुत्तवसेसं भुंजइ सो भुंजए जिणुवदिट्ठं।  
संसारसारसोक्खं कमसो णिव्वाणवरसोक्खं।।22।।
3. भरहे दुस्समकाले धम्मज्झाणं हवेइ साहुस्स।  
तं अप्पसहावठिडे ण हु मण्णइ सो वि अण्णाणी।।76।।
4. अज्जवि तिरयणसुद्धा अप्पा ज्ञाएवि लहइ इंदत्तं।  
लोयत्तिं देवत्तं तत्थ चुदा णिव्बुदिं जंति।।77।। मोक्षपाहुइ पृ. 275।
5. देवे थुवइ वियाले पव्वे सुपोसहोवासं।  
अतिहीणं संविभागे मरणंते कुणइ सल्लिहणं।।355।। भावसं. पृ. 81।
6. सामायिकं प्रकुर्वीत कालत्रये जिनं प्रति।  
श्रावको हि जिनेन्द्रस्य जिनपूजा पुरःसरम् ।।463।। भावसं. वामदेववि. पृ. 195।

1. दाणं पूजा मुखं सावयधम्मो ण सावया तेण विणा।

ज्ञाणज्जयणं मुखं जइधम्मं ण तं बिणा तहा सोवि।।11।।

“जिनपूजा<sup>1</sup> के बिना सभी सामायिक क्रियाएँ दूर ही हैं अर्थात् नहीं हो सकती हैं।” उसी का संक्षिप्त वर्णन—

प्रातःकाल उठकर शौच, आचमनपूर्वक प्रभातिक विधि करें। शुद्ध जल से स्नान कर मंत्र-स्नान (मंत्रपूर्वक संध्या-वंदन विधि) और व्रत स्नान ऐसे तीन स्नान करें, धुले हुए वस्त्र पहनकर जिनमंदिर में जाकर निःसहि मंत्र का उच्चारण करते हुए प्रवेश करें और ईर्यापथ शुद्धि करके जिनेन्द्र भगवान का स्तवन करें पुनः बैठकर सकलीकरण विधि करें।

पूजा-पात्र, पूजा-द्रव्य आदि को शुद्ध करके पंचामृत अभिषेक पाठ में कही गई विधि के अनुसार जिनेन्द्र भगवान का विधिवत् पंचामृत अभिषेक करें पुनः अष्टद्रव्य से पूजा करके अर्घ्य प्रदान करके शांतिधारा करें और पुष्पांजलि क्षेपण करें। पूजन में अष्टद्रव्य से अर्चन और अर्घ्य के बाद शांतिधारा, पुष्पांजलि करना<sup>2</sup> चाहिए जो कि शास्त्रोक्त है—

पुनः अपनी रुचिपूर्वक एक-दो या कई पूजन करके पंचनमस्कार मंत्र द्वारा 108 पुष्पों से या लवंगों से जाप्य करें। सिद्धचक्र यंत्र आदि यंत्रों की पूजा, जाप्य आदि करके चैत्यभक्ति और पंचगुरुभक्ति बोलकर शान्ति भक्ति, समाधि भक्ति करें और विसर्जन विधि करें। अनन्तर अन्तर्मुहूर्तपर्यन्त या जितना अवकाश है, उतने काल तक स्वस्थचित्त से अपनी शुद्ध आत्मा का ध्यान करें।

अनन्तर श्रुतपूजा, गुरुपूजा करके आर्यिका और ऐलक आदि की विधिवत् पूजा करें।

इस प्रकार से श्रावक की सामायिक विधि है। विशेष—संहिता-शास्त्रों में और प्रतिष्ठाशास्त्रों में भी यही विधि नित्य पूजनविधि में कही गई है। मतलब यह है कि यदि श्रावक इस विधि के अनुसार पूजन करता है तो सामायिक विधि उसी में सम्मिलित होने से उसकी सामायिक विधि भी वही कहलाती है। “जम्बूद्वीप पूजांजलि<sup>3</sup>” नाम की जिनवाणी में ‘पूजामुखविधि’ और ‘पूजाअन्त्यविधि’ में विधि करने का स्पष्टीकरण है। श्रावक को पूजनविधि के प्रारंभ में ईर्यापथ शुद्धि और सिद्धभक्ति करना चाहिए। अनन्तर विधिवत् पंचामृत अभिषेक और अष्टद्रव्य से पूजन करके चैत्यभक्ति, पंचगुरुभक्ति और शान्तिभक्ति करना चाहिए यही विधि श्री पूज्यपाद स्वामीकृत पंचामृताभिषेक पाठ में भी पाई जाती है।

1. “जिनपूजां बिना सर्वा दूरा सामायिकी क्रिया।” भावसंग्रह, वामदेवकृत पृ. 195।  
2. अर्घ्य के बाद शांतिधारा और पुष्पांजलि करने की प्रथा दक्षिण में सर्वत्र है, उत्तर में प्रायः कम है।  
3. वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला से प्रकाशित ‘जम्बूद्वीप पूजांजलि’ पुस्तक मंगाकर देखना चाहिए।

**अतिथिसंविभाग व्रत में भी दान का वर्णन करते हुए बताया है—**

पात्र, दातार, दानविधि, दातव्य—देने योग्य पदार्थ और दान का फल ये पाँच अधिकार होते हैं।

**पात्र के तीन भेद हैं—**उत्तम, मध्यम और जघन्य। रत्नत्रयधारी निर्ग्रथ दिगम्बर साधु उत्तम पात्र हैं, ग्यारह प्रतिमा में से कोई भी प्रतिमाधारी श्रावक मध्यम पात्र हैं एवं अविरत सम्यग्दृष्टि जघन्य पात्र हैं।

जप, तप आदि से सहित किन्तु सम्यक्त्व से रहित कुपात्र हैं एवं सम्यक्त्व, शील तथा व्रतों से रहित जीव अपात्र हैं।

**दातारों के गुण—**श्रद्धा, भक्ति, संतोष, विज्ञान, अलुब्धता, क्षमा और शक्ति, ये सात गुण हैं।

**दानविधि—**प्रतिग्रह—पड़गाहन करना, उच्च स्थान देना, पाद-प्रक्षालन करना, पूजा करना, प्रणाम करना, मनःशुद्धि, वचन शुद्धि, कायशुद्धि और भोजन की शुद्धि कहना, ये नवधा भक्ति कहलाती है। इस नवधाभक्ति के हुए बिना उत्तम साधु आहार नहीं करते हैं।

**दातव्य वस्तु—**आहार, औषधि, शास्त्र और अभयदान ये दोनों योग्य हैं।

**दान का फल—**“सम्यग्दृष्टि<sup>1</sup> के द्वारा पात्रों में दिया गया दान स्वर्ग, मोक्ष फल को प्रदान करता है। कुपात्र में दिया गया दान फल रहित है एवं अपात्र में दिया गया दान अत्यन्त दुःख को देने वाला है।”

**गृहस्थ धर्म को धारण करने वाले पुरुष का लक्षण—**“न्यायपूर्वक<sup>2</sup> धन कमाने वाला, गुणों से गुरु—माता-पिता का सम्मान एवं गुरुओं की, मुनियों की पूजा करने वाला, सत्य वचन बोलने वाला, परस्पर विरोध रहित धर्म, अर्थ और काम, इन तीन वर्गों को सेवन करने वाला, तीन पुरुषार्थ के योग्य, स्त्री, ग्राम और घर जिसके हैं, ऐसा लज्जाशील, शास्त्रोक्त योग्य आहार तथा विहार करने वाला, आर्य पुरुषों की संगति करने वाला, बुद्धिमान, दूसरों द्वारा किये हुए उपकार को मानने वाला, इन्द्रियों को वश में रखने वाला, धर्मविधि को सुनने वाला, दयालु और पापों से भयभीत पुरुष ही गृहस्थ धर्म को धारण करने के लिए योग्य है।

1. वसुनन्दि श्रावकाचार।  
2. “न्यायोपात्तधनो यजन् गुणगुरुन् सदगीस्त्रिवर्ग भजन्, अन्योन्यानुगुणं तदर्हगृहिणी स्थानालयो ह्रीमयः। युक्ताहारविहार आर्यसमितिः प्राज्ञः कृतज्ञो वशी, शृण्वन् धर्मविधिं दयालुरघभीः सागारधर्म चरेत्।।11।। सागारधर्मावृत, पृ. 20।

## सूतक-पातक वर्णन

बालक का जन्म होने पर जो घरवालों को और कुटुम्बियों को कुछ कालावधि के लिए देवपूजा, आहारदान आदि का कार्य वर्जित किया जाता है, उसी का नाम सूतक है एवं किसी के मरण के बाद जो अशौच होता है, उसे पातक संज्ञा है। यह सूतक-पातक आर्षग्रंथों से मान्य है। व्यवहार में जन्म-मरण दोनों के अशौच को सूतक शब्द से जाना जाता है।

जातीय बन्धुओं में प्रत्यासन्न और अप्रत्यासन्न ऐसे दो भेद होते हैं। चार पीढ़ी तक के बंधुवर्ग प्रत्यासन्न या समीपस्थ कहलाते हैं, इसके आगे अप्रत्यासन्न कहलाते हैं

जन्म का सूतक चार पीढ़ी वालों तक के लिए 10 दिन का है। पाँचवी पीढ़ी वालों को 6 दिन का, छठी पीढ़ी वालों को 4 दिन का और सातवीं पीढ़ी वालों को 3 दिन का है। इससे आगे वाली पीढ़ी वालों के लिए सूतक नहीं है, ऐसे ही मरण का सूतक भी चार पीढ़ी वालों तक के लिए 10 दिन का (कहीं-कहीं 12 दिन का सूतक मानने की परम्परा है) पाँचवी पीढ़ी के लिए 6 दिन का आदि है।

जन्म का सूतक चल रहा है, इसी बीच परिवार में मरण का सूतक आ जाने पर वह जन्म के सूतक के साथ समाप्त हो जाता है, ऐसे ही मरण के सूतक में जन्म का सूतक आ जाने पर उसी पहले वाले मरण के सूतक के साथ समाप्त हो जाता है, ऐसे ही जन्म का सूतक यदि 5-6 दिन का हो चुका है पुनः परिवार में किसी का जन्म हो जाये, तो वह सूतक पहले के साथ ही निकल जाता है। यदि पहले सूतक के अंतिम दिन पुनः किसी का जन्म आदि होवे, तो दो दिन सूतक ॐ मानना चाहिए। यदि दूसरे दिन होवे तो तीन दिन का और मानना चाहिए। मरण सूतक के बीच में यदि किसी का मरण हो जावे तो वह पहले सूतक के साथ समाप्त नहीं होगा। यदि किसी ने आत्महत्या पूर्वक मरण कर लिया है तो उसके परिवारजनों को 6 माह का सूतक माना गया है, कदाचित् किन्हीं विशेष जानकार आचार्य या गणिनी माताजी के पास जाकर उनके द्वारा प्रदत्त प्रायश्चित्तादि ग्रहण करने पर 6 महीने के मध्य में भी शुद्धि मानी गई है।

साधु-साध्वियों को जन्म और मरण का सूतक नहीं लगता है और साधुओं का मरण होने पर उनके परिवार वालों को भी सूतक नहीं लगता है। राजा के घर में पुत्र जन्म होने पर उनकी शुद्धि स्नानमात्र से हो जाती है। राजाओं को सूतक नहीं लगता है।

मंत्री, सेनापति, राजा, दास और दुर्भिक्ष आदि आपत्ति से पीड़ित लोग इनके मरने पर भी सूतक नहीं लगता है। युद्ध में मरने पर भी सूतक नहीं लगता है।

गर्भवती का तीन महीने के अंदर ही यदि गर्भस्राव हो जावे तो उसे ही तीन दिन का अशौच है। तीन महीने से लेकर छह महीने तक का यदि गर्भपात हो जाता है तो जितने महीने का हो, उतने दिन का अशौच है। छह महीने के बाद और आठ महीने तक में यदि गर्भपात होकर नष्ट हो जाता है तो माता को पूरे 10 दिन का अशौच है, पिता को स्नानमात्र से शुद्धि है।

नाभि छेदन से पहले यदि बालक मर जाये तो माता को पूर्ण 10 दिन का अशौच है, पिता व बंधुओं को तीन दिन का है। 10 दिन के पहले यदि मर जावे तो पिता व सबको 10 दिन का है। दस दिन पूर्ण होने पर अंतिम दिन यदि बालक मर जाये तो दो दिन का अशौच और पालना चाहिए। दूसरे दिन प्रातः मरण होने पर तीन दिन अशौच और पालना चाहिए। 10 दिन बाद मरण होने पर माता-पिता व सहोदरों को दस दिन का अशौच है। इतर बांधवों को स्नानमात्र से शुद्धि है। दांत आने के बाद मरण होने पर पिता, भ्राता को दस दिन का तथा शेष जनों को स्नानमात्र से शुद्धि है। चौल कर्म के बाद बालक के मरने पर पिता-भ्राता को 10 दिन का, चार पीढ़ी वालों तक 5 दिन का, आगे की पीढ़ी वालों को एक दिन का है। उपनयन के बाद मरण होने पर चार पीढ़ी वालों तक 10 दिन का अशौच है।

पुत्री का मरण यदि चौलकर्म से पहले हो जावे तो बंधुओं को स्नानमात्र से शुद्धि है। व्रतसंस्कार से पहले मरण होने पर एक दिन का अशौच है। विवाहित पुत्री का पतिगृह में मरण होने पर माता-पिता को दो दिन का अशौच है। शेष जाति बांधवों को स्नानमात्र से शुद्धि है। पतिपक्ष वालों को पूर्ण 10 दिन का सूतक है। यदि वह स्त्री पिता के घर में मरण पावे या प्रसूत हो तो माता-पिता को तीन दिन का अशौच है और उस पक्ष वालों को एक दिन का अशौच है।

दूर देश के अपने परिवार के किसी व्यक्ति के मरण का समाचार मिलने पर अवशिष्ट दिन का सूतक पालना चाहिए। जन्मादि होकर 10 दिन बाद समाचार मिलने पर तीन दिन का अशौच मानना चाहिए। अगर एक वर्ष बाद मरण समाचार ज्ञात हो तो स्नानमात्र करना चाहिए। इस प्रकार यह संक्षिप्त सूतक-पातक विधि कही गई है।



## रजस्वला स्त्री का अशौच

महीने-महीने में स्त्रियों के जो रजःस्राव होता है, उस समय वो स्त्रियाँ रजस्वला कहलाती हैं। उन दिनों में उन्हें किसी भी वस्तु का स्पर्श नहीं करना चाहिए। देव-शास्त्र और गुरु का दर्शन भी नहीं करना चाहिए। अर्धरात्रि के अनन्तर रजस्वला होने पर प्रातःकाल से अशौच गिनना चाहिए। इस तरह रजस्वला स्त्री तीन दिन तक स्नान, अलंकार आदि न करे, ब्रह्मचर्य का पालन करे। चतुर्थ दिवस स्नान कर शुद्ध होकर घर के काम-काज कर सकती है, देवपूजा, गुरुपास्ति आदि कार्यों को पाँचवें दिन कर सकती है।

एक बार रजस्वला होने के बाद बारह दिन के अंदर ही यदि रजोदर्शन हो जाये तो वह स्नान से शुद्धि हो जाती है। यदि अठारह दिन के पहले रजःस्राव हो जाता है, तो भी स्नानमात्र से शुद्धि हो जाती है। यदि अठारहवें दिन होता है तो दो दिन का अशौच मानना चाहिए। अठारह दिन के बाद होने पर तीन दिन तक अशुद्धि मानी गई है। रजस्वला स्त्रियाँ यदि आपस में एक-दूसरे को स्पर्श कर लेती हैं तो उन्हें चतुर्थ दिवस शुद्ध होकर गुर्वानी के पास प्रायश्चित लेने का विधान है।

जो स्त्रियाँ रजस्वला के दिनों में अशौच का पालन नहीं करती हैं, सभी को छूती रहती हैं या भोजन बनाकर सभी को खिला देती हैं, वे इस लोक में स्वास्थ्य हानि के साथ-साथ धार्मिक परम्परा की हानि करती हैं तथा पाप का संचय करके अगले भव की भी हानि कर लेती हैं अतः महिलाओं को इन तीन दिनों में विवेकपूर्वक अशौच का पालन करना चाहिए।

**रजस्वला स्त्री के कर्तव्य—**

**आर्तवं सौतिकं चैव, मार्त्यवं तत्सुसंगमम्।**

**अशौचं कथितं देवैः, द्विजानां सुव्रतात्मनाम्॥**

अर्थ—जिनेन्द्र भगवान ने व्रत पालने वाले त्रिवर्णों को चार प्रकार का सूतक बतलाया है। पहला आर्तव-ऋतुधर्म-मासिकधर्म से होने वाला, दूसरा सौतिक-प्रसूति से होने वाला, तीसरा मार्त्यव-मृत्यु से होने वाला और चौथा इन तीनों के संसर्ग से होने वाला।

**दिनत्रय-मशौचं स्यात् सा चतुर्थेऽहि शुद्धयति।**

**पत्यौ हि केवलं सा च, दान-पूजासु पंचमे॥**

**अर्थ—**रजस्वला स्त्री को तीन दिन तक अशौच मानना चाहिए। वह स्त्री चौथे दिन पति आदि परिवारजनों को भोजन आदि बनाने के लिए शुद्ध मानी जाती है तथा दान-पूजादि धर्मकार्यों में (यदि पूर्ण शुद्ध हो तो) पाँचवें दिन शुद्ध मानी जाती है।

**उपर्युपरि संजाता, भूयो भूयो रजस्वला।**

**दान-पूजा-क्रियादौ च, नाधिकारोऽस्ति सर्वथा।**

**अर्थ—**यदि कोई स्त्री बार-बार रजस्वला होती हो, स्नान करने के बाद फिर रजस्वला हो जाती हो तो उसे पात्रदान एवं जिनपूजा आदि किसी भी प्रकार के धर्म-कर्म नहीं करने चाहिए। धार्मिक क्रियाएँ करने का उसे अधिकार नहीं होता है।

**रोगादि-कारणाज्जाता, भूयो भूयो रजस्वला।**

**तस्या अप्यधिकारो न, दान-पूजादि-कर्मणि॥**

**अर्थ—**कोई स्त्री भले रोग आदि के कारण भी बार-बार रजस्वला होती हो तो भी उसे दान-पूजा आदि कोई भी धार्मिक कार्य करने का अधिकार नहीं है।

**रजस्वला स्त्री के कर्तव्य—**

**रजस्वला हि चैकान्ते, तिष्ठेन्मौनेन सा तदा।**

**ब्रह्मचर्य-समायुक्ता, जन-स्पर्शविवर्जिता।**

**अर्थ—**रजस्वला स्त्री को किसी एकान्त स्थान में मौन धारण कर बैठना चाहिए। ब्रह्मचर्य का पूर्ण पालन करना चाहिए और अन्य किसी का भी स्पर्श नहीं करना चाहिए।

**गृहकार्यं न सा कुर्याद्, गानं नृत्यं च वादनम्।**

**सीवनं रन्धनं हास्यं, पेषणं जलगालनम्॥**

**विदधाति न षट्कर्म, ध्यायन्ती श्रीजिनं हृदि।**

**गुरुदेवजनैः सार्धं, कुर्यान्नैव च भाषणम्॥**

**अर्थ—**उस रजस्वला स्त्री को गृहकार्य नहीं करना चाहिए। गाना, नाचना, वाद्य बजाना, वस्त्र आदि सीना, चाय, नाश्ता एवं रसोई आदि बनाना, हास्य करना, पीसना एवं जल आदि छानना ऐसे अन्य और भी कोई कार्य नहीं करना चाहिए।

षट्कर्मों में से भी कोई धर्म-कर्म उसे नहीं करना चाहिए। उसे तो केवल अपने हृदय में जिनेन्द्र भगवान का स्मरण करते रहना चाहिए तथा गुरु एवं अन्य जनों के साथ किसी प्रकार की भी बातचीत नहीं करनी चाहिए।

**नीरसं भोजनं कुर्यात्, पत्रे पित्तल-भाजने।**

**कुर्याद्वैकाशनं शुद्धं, रहसि स्वस्थ-मानसा॥**

अर्थ—रजस्वला स्त्री को पत्तल में या पीतल के बर्तन में नीरस भोजन करना चाहिए और एकाशन करते हुए स्वस्थ चित्त से एकान्त में रहना चाहिए।

**चतुर्थऽह्नि विदध्यात्सा, स्नानं पूर्णं सवस्त्रकम्।**

**उष्णोदकेन वा शुद्ध-जलेनाचमनान्विता।।**

**ततः प्रसन्न-भावेन, पतिं सा समलोकयेत्।**

**तमेव भावयेच्चित्ते, तस्या एतद् व्रतं मतम्।।**

अर्थ—उस रजस्वला स्त्री को चौथे दिन छने हुए शुद्ध जल से या गर्म जल से सवस्त्र स्नान करके और कुल्ला आदि करके प्रसन्नचित्त से सर्वप्रथम अपने पति के दर्शन करने चाहिए, अपने हृदय में पति का ही चिन्तन करना चाहिए। यह उसको अपना एक व्रत समझना चाहिए।

दूसरे-तीसरे दिन रसोई आदि बनाकर परिवार को नहीं खिलाना चाहिए।

गृहकार्य के लिए नल आदि से जल नहीं भरना चाहिए।

स्नान आदि के जल का स्पर्श नहीं करना चाहिए।

वस्त्रों को धोने, सुखाने और उन्हें उठाकर उनकी तह आदि के कार्य नहीं करना चाहिए।

आपके घर के सदस्य यदि आपकी अशुचि अवस्था में स्पर्शित अशुद्ध जल से स्नान करके और वे ही वस्त्र पहिनकर मंदिर जाते हैं, स्वाध्याय करते हैं, माला फेरते हैं, तो इसका पाप आपको लगता है अर्थात् इससे आपके पाप-कर्म का बंध होता है।

**क्या आप जानती हैं कि 96 कुभोगभूमियों में कौन उत्पन्न होते हैं?**

श्रीमन्नेमिचन्द्राचार्य त्रिलोकसार गाथा 924 में कहते हैं कि—

**दुःस्वभाव-असुचि-सूदग-पुष्पवर्ष-जाइसंकरादीहिं।**

**कय-दाणा वि कुवत्ते, जीवा कुणरेसु जायंते।।**

अर्थ—जो दुर्भावना अर्थात् ईर्ष्या आदि खोटे भावों से आहारदान देते हैं, जो अपवित्र अवस्था में अथवा द्रव्य, क्षेत्र, काल एवं भाव इन चार शुद्धियों की अवहेलना करके आहारदान देते हैं, जो सूतक-पातक आदि को नहीं मानते और आहारदान आदि देते हैं, जो रजस्वला स्त्री के स्पर्श से युक्त आहार देते हैं, जो जातिसंकर आदि दोषों से दूषित होते हुए भी आहारदान देते हैं और जो कुपात्रों को दान देते हैं, वे जीव मरकर कुभोग-भूमियों में कुमनुष्य होते हैं।

**वैदिक धर्म में भी कहा है कि—रजस्वला स्त्री एकान्त में रहे। किसी भी**

वस्तु का स्पर्श न करे। हल्का भोजन ग्रहण करे। सांसारिक कार्यों से मुक्त (दूर) रहे। रंगीनशृंगारिक वस्त्र न धारण करे। प्राकृतिक जीवन व्यतीत करे। तेल-उबटन का उपयोग न करे। शृंगार की दृष्टि से स्नान न करे। आमोद-प्रमोद से कोसों दूर रहे। किसी से वार्तालाप न करे। घास-फूस अथवा जूट के बिस्तर पर शयन करे। मिट्टी के बर्तन में मूँग, चावल जैसा सात्त्विक भोजन करे। शृंगार न करे। हँसी-मजाक न करे। सार्वजनिक स्थल अर्थात् हॉल, चबूतरा, गैलेरी व चौपाल जैसे स्थानों पर न बैठे। पति के साथ भी वार्तालाप न करे। मंदिर और गौशाला में न जावे। “दिनत्रयं त्यक्त्वा शुद्धा स्याद् गृहकर्मणि” अर्थात् रजस्वला स्त्री तीन दिन के बाद ही गृहकार्य करने हेतु शुद्ध होती है।

धर्मप्राण और शीलप्रधान भारत देश के प्रायः सभी धर्म रजस्वला अवस्था को संक्रामक रोग सदृश अछूत और अपवित्र घोषित कर रहे हैं व उस अवस्था में आपको क्या-क्या नहीं करना चाहिए, इसका विधान बता रहे हैं, अतः आप सभी महिलाओं को इसे स्वीकार करना चाहिए।

इस प्रकार से श्रावक-श्राविकाओं को अपनी वर्तमान एवं भावी पीढ़ी को संस्कारित करने हेतु अष्टमूलगुण आदि का पालन करने के साथ-साथ निम्न षट्कर्तव्यों को भी यथाशक्ति पालन करना चाहिए—

**देव पूजा गुरुपास्तिः, स्वाध्यायः संयमस्तपः।**

**दानं चेति गृहस्थानां, षट्कर्माणि दिने दिने।।**

अर्थात् जिनमंदिर में जाकर जिनेन्द्र भगवान की पूजा, गुरु की उपासना, शास्त्र स्वाध्याय, संयम, तप और दान ये गृहस्थों को षट्कर्म प्रतिदिन करना चाहिए।

इन षट्कर्माँ में भी दान और पूजा इन दो क्रियाओं को श्री कुंदकुंद आचार्य ने सर्वाधिक महत्त्व देते हुए कहा है—

“दाणं पूया मुख्खो, सावय धम्मो ण सावया तेण विणा” अर्थात् दान और पूजन ये श्रावक धर्म की दो मुख्य क्रियाएँ हैं, इनके बिना श्रावक संस्कार सार्थक नहीं है।

जिनेन्द्र भगवान की पूजन और उनके दर्शन का भारी महत्त्व जैन रामायण (पद्मपुराण) में भी आया है—

**फलं ध्यानाच्चतुर्थस्य, षष्ठ्योद्यममात्रतः।**

**अष्टमस्य तदारम्भे, गमने दशमस्य तु।।178।।**

द्वादशस्य ततः किञ्चिन्मध्ये पक्षोपवासजम्।  
 फलं मासोपवासस्य लभते चैत्यदर्शनात् ॥179॥  
 चैत्याङ्गणं समासाद्य याति षण्मासिकं फलम्।  
 फलं वर्षोपवासस्य प्रविश्य द्वारमश्नुते ॥180॥  
 फलं प्रदक्षिणीकृत्य भुङ्क्ते वर्षशतस्य तु।  
 दृष्ट्वा जिनास्यमाप्नोति फलं वर्षसहस्रजम् ॥181॥  
 अनंतफलमाप्नोति स्तुतिं कुर्वन् स्वभावतः।  
 नहि भक्तेर्जिनेन्द्राणां विद्यते परमुत्तमम् ॥182॥

**अर्थ**—जो मनुष्य जिनप्रतिमा के दर्शन का चिन्तन करता है वह बेला का, जो उद्यम का अभिलाषी होता है वह तेला का, जो जाने का आरंभ करता है वह चौला का, जो जाने लगता है वह पाँच उपवास का, जो कुछ दूर पहुँच जाता है वह बारह उपवास का, जो बीच में पहुँच जाता है वह पंद्रह उपवास का, जो मंदिर के दर्शन करता है वह मासोपवास का, जो मंदिर के आँगन में प्रवेश करता है वह छह मास के उपवास का, जो द्वार में प्रवेश करता है वह वर्षोपवास का, जो प्रदक्षिणा देता है वह सौ वर्ष के उपवास का, जो जिनेन्द्रदेव के मुख का दर्शन करता है वह हजार वर्ष के उपवास का और जो स्वभाव से स्तुति करता है वह अनंत उपवास के फल को प्राप्त करता है। यथार्थ में जिनभक्ति से बढ़कर कोई उत्तम पुण्य नहीं है ॥178-182॥

अतः जिनेन्द्र भगवान के दर्शन करके अपने जन्म-जन्म के पापों को नष्ट करके असीम पुण्य का उपार्जन करना चाहिए।



## अहिंसक बनने के लिए कम से कम इतना अवश्य करें!

1. चमड़े की वस्तुओं का उपयोग न करें।
2. हाथी दाँत से बनी वस्तुओं का इस्तेमाल न करें।
3. नहाने-धोने में उन साबुनों का उपयोग करें, जिनमें चर्बी न हो।
4. रसोई तथा मंदिरों में पानी छानने हेतु एवं अन्य कार्यों में खादी का कपड़ा काम में लें, क्योंकि दूसरे कपड़ों में कलफ की अशुद्धि रहती है।
5. उन दुकानों से कोई सामान न खरीदें, जिसमें अण्डे बेचे जाते हों।
6. दूधपेस्टों का उपयोग न करें अथवा वे दूधपेस्ट ही काम में लें जिन पर 'वीगन' अथवा 'पशु उत्पाद रहित' शब्द अंकित हो।
7. महंगी वाली आइसक्रीम, फ्रूटेला, मिंटोस, रौले, मास्टिकेबिल्स का उपयोग न करें।
8. 'पी एण्ड जी' के उत्पाद काम में न लें।
9. जिलेट ब्लैडों का इस्तेमाल न करें।
10. कैप्सूलस न खाएँ। अनिवार्य होने पर अन्दर की औषधि खाएँ, कैप्सूल फेंक दें।
11. लिफ्टिक, शैम्पूज आदि का भूलकर भी उपयोग न करें।
12. रोओं से बनी वस्तुएँ न खरीदें और न ही उपहार में दें।
13. सेंट, डियोडरेंट्स इत्यादि का इस्तेमाल न करें।
14. जहाँ तक संभव हो चीनी के बर्तन काम में न लें। इनकी जगह काँच अथवा धातु के पात्रों का उपयोग करें।
15. सरेस का उपयोग न करें।
16. जिन एलोपैथिक दवाइयों में हीमोग्लोबिन, लिक्वर, पैक्रियाज आदि का उल्लेख हो, उनका सेवन न करें, क्योंकि ये दवाइयाँ मांसाहारी होती हैं।

### अहिंसक सौंदर्य प्रसाधनों का उपयोग करें—

'ब्यूटी विदाउट क्रूएलिटी' संस्था द्वारा निम्न प्रसाधन सामग्रियों की सूची बनाई गई है जिसमें केवल वनस्पति पदार्थ ही प्रयुक्त होते हैं तथा जिनके बनाने व जाँचने में किसी भी पशु-पक्षी को कष्ट नहीं दिया जाता है। उन्हीं सामग्रियों को उपयोग में लें।

जैसे-

(ब्रॉण्ड)

1. **नेलपॉलिश**—लकमे, टीना
2. **पाउडर/फेश पाउडर**—सिन्थॉल, फेस्का, गंगा, मार्बल, अहिंसा, नीम, कुटीर, शिकाकाई, क्राउनिंग, ग्लोरी, मैसूर-चंदन, संसार, चन्द्रिका, मोती, हमाम, जय, ओ.के., रिया, नीको, विजिल
3. **टूथपेस्ट**—प्रॉमिस, बबूल, विक्को वज्रदन्ती
4. **तेल आदि**—कैलेमाइन (लकमे) अलमैसा, नारियल तेल, आँवला, ब्राह्मी (वैद्यनाथ, झण्डू) चन्दन तेल।
5. **क्रीम**—कोल्ड क्रीम (लकमे), टियारा, विक्को
6. **परफ्यूम**—शालीमार, लकमे
7. **शैम्पू**—आर्निका, सन, ब्यूटी (मिस्टी)
8. **आफ्टर शेव लोशन**—कन्सरि, लकमे, सन
9. **लिप्स्टिक**—लकमे, टिप्स एण्ड रोज

## पानी छानकर पियें

बिना छने हुए पानी की एक बूंद में 36450 जीव वैज्ञानिकों ने बताये हैं। ये जीव दिखाई नहीं देते हैं। अनछने पानी को पीने से स्वास्थ्य दूषित होता है, जिससे अनेक रोग हो जाते हैं, इसलिए जल छानकर पीना चाहिए। बिना छना पानी पीने से अनंत जीवों का घात होता है। मोटे कपड़े के दोहरे छन्ने से छानना चाहिए, और छानने की क्रिया के पश्चात् बिलछानी (कपड़े को अलग छने पानी से सावधानी से धोना) पानी में डाल देना चाहिए ताकि छन्ने के ऊपर के जीवों की रक्षा अपने विवेक और सावधानी से हो। कुँए के पानी की बिलछानी कुँए में छोड़ना चाहिए। इस कार्य के लिए बिलछानी (अनछने पानी) के अशुद्ध पानी की बाल्टी के दोनों छोर में रस्सी बाँध कर कुँए में छोड़ना चाहिए। छना हुआ पानी 48 मिनट तक जीव रहित रहता है। इसके बाद पुनः उसमें जीव उत्पन्न हो जाते हैं। अतः उसे फिर से छानना चाहिए। छने हुए पानी में लौंग, इलायची आदि डालने से पानी प्रासुक हो जाता है। उसकी मर्यादा 6 घंटे की है। गर्म किये हुए जल की मर्यादा 24 घंटे की होती है। आजकल रेडियो, टी.वी. पर भी हर समय

यहीं चेतावनी एवं सलाह दी जाती है कि पानी छानकर पीना चाहिए। पानी छानकर पीने से स्वास्थ्य उत्तम रहता है और धर्म का पालन होता है। कहा जाता है कि रात का रखा हुआ चार गिलास पानी (गर्म किया हुआ प्रासुक जल) सुबह सूर्योदय से पूर्व पीने से कई बीमारियाँ दूर हो जाती हैं। पानी पीने के 45 मिनट तक कुछ न खायें। इसके प्रयोग से ठीक होने वाली बीमारियाँ मधुमेह (डायबिटीज), ब्लडप्रेसर, जोड़ों का दर्द, हृदय रोग, बेहोशी, मेनोनजाईटीस, पेशाब की समस्त बीमारियाँ, पथरी, धातुस्राव, गर्भाशय कैंसर, बवासीर, पेट के रोग, मानसिक दुर्बलता, त्वचा पर झुर्रियाँ, लकवा, खाँसी, कफ, दमा, आँखों की बीमारियाँ, प्रदर, एसीडिटी, सूजन, बुखार, फोड़ा-फुन्सी, कील मुँहासे, रक्त की कमी, मोटापन, टी.बी., लीवर के रोग, अनियंत्रित मासिक स्राव, कफ जन्य रोग, गेस्ट्रिक ट्रबल एवं कमर से संबंधित रोग हैं।

इन रोगों को दूर कर अपना शरीर स्वस्थ बनावें और अपने पड़ोसियों को भी इन रोगों से मुक्ति पाने हेतु छना पानी पीने की प्रेरणा प्रदान करें।



## जैन हर्बल्स कंपनी-मुम्बई द्वारा उत्पादित अहिंसक प्रसाधन सामग्री

अहिंसक पदार्थों की शृंखला में एक अन्य नाम है 'वनौषधियों' का, जिनका उत्पादन डॉ. उर्जिता जैन (एम.डी.)-मुम्बई द्वारा संचालित 'वनौषधि केन्द्रों' में किया जा रहा है। स्वास्थ्य एवं सौंदर्य के क्षेत्र में पूर्णतया वनस्पति आधारित इन अहिंसक पदार्थों की लिस्ट यहाँ प्रस्तुत है, ताकि सुधीपाठक इन प्रतिदिन काम आने वाली वस्तुओं के प्रयोग से अपने अहिंसा व्रत को संरक्षित रख सकें।

### शाश्वत सौंदर्य का सदियों पुराना राज

#### बालों की देखभाल

**जास्वंद जेल (बालों की देखभाल के लिए)**—यह शुद्ध जेल ताजे, प्राकृतिक जास्वंद फूलों के संयुक्त तत्त्व से बना है जिसमें बालों की देखभाल करने वाली अन्य वनौषधियाँ भी हैं। बालों के गिरने की शुरुआत होते ही या बालों का जगह-जगह कम होना देखते ही इस्तेमाल शुरू करें। यह बालों का उगाना तेज करता है। बालों को नर्म-मुलायम, स्वस्थ एवं संवारने योग्य बनाता है। सिर की त्वचा को गर्मी से राहत देता है। रूसी, सर की त्वचा के दूषण, तथा समय पूर्व बालों को पकने से रोकता है।

**हेरोमा (अरोमा केश तेल)**—सुंदर बालों के लिए यह 100 प्रतिशत कुदरती केश तेल अरोमाथेरपि तेलों से युक्त है। यह तिल तेल, बादाम, व्हीटजर्म तेल, जेरैनियम, रोजमेरी, मोतिया रोशा इत्यादि तेलों का एक सुंदर मिश्रण है। यह सुगंधी, चिपचिपारहित है और बालों को झड़ने से रोककर सुंदर बनाता है।

**केशिका (बाल धोने के लिए)**—बालों को धोने का 100 प्रतिशत प्राकृतिक उपाय। शैम्पू और साबुन का उत्तम पर्याय, इसमें कोई भी रासायनिक द्रव्य नहीं। शिकाई, रिठा, क.सुगंधी और संतरा छाल से युक्त। पुरुष और महिलाओं द्वारा नियमित उपेक्षा के लिए आदर्श, बस पानी मिलाकर पेस्ट बनाइए, लगाइए और सिर की त्वचा पर मालिश करके धो डालिए। बालों में कुदरती चमक-दमक और उछाल आ जायेगा।

**ट्रायडॉफ (बालों में डेँडूफ होना)**—यह सिर की त्वचा की कोमलता से सफाई करे, मृत त्वचा को अलग करे। जलन और संक्रमण से बचाये। सिर की त्वचा की अतिरिक्त गर्मी मिटाये। अलो वेरा जेल (पतला) के साथ पेस्ट बनाइए।

सिर की त्वचा पर धीरे-धीरे मालिश कीजिए। 20 मिनट बाद धो डालिए। बाल नर्म-मुलायम, रेशमी और डेँडूफ (रूसी) से मुक्त हो जायेंगे। सप्ताह में दो-बार, सिर धोने से पहले इस्तेमाल करें। उम्र चाहे जो हो।

**न्यू क्रॉप (केश वर्धक)**—जास्वंद, ब्राह्मी, कुलिंजन, जटामांसी जैसी वनौषधियाँ बालों का गिरना रोकती हैं। नये स्वस्थ बालों को उगाने में सहायता देती हैं। रूसी से बचाता है। बालों की जड़ों को नया जीवन देता है। अलो वेरा जेल (पतला) में पेस्ट बनाकर मस्तिष्क पर मालिश कीजिए। 20 मिनट बाद धो डालिए। बीमारी आदि या प्रसूती की वजह से अचानक गिरते बालों को रोकता है।

**ग्रेनिल (सफेद बालों के लिए)**—सफेद बालों के लिए 100 प्राकृतिक उपाय। कुदरती वनौषधियाँ, जैसे आंवला, मेहंदी, जास्वंद, इंडिगो तथा सोफिया तेल से निर्मित। ये सिंथेटिक हेयर डाइ में पाये जानेवाले हानिकारक रसायनों से मुक्त है। बालों का गिरना रोकता है। बालों को मुलायम बनाता है तथा बालों को समय से पहले सफेद होने से बचाता है।

#### त्वचा की देखभाल

**हर्बोलेप (उबटन)**—इसमें उबटन है, जो भारत में प्राचीन काल से त्वचा को निखारने, उसे नया जीवन देने और रक्त संचार को सुधारने के लिए प्रयोग में लाया जाता रहा है। इसकी पानी में बनाई पेस्ट को चेहरे व शरीर पर लगाइए, कुछ समय तक मलिए, और फिर पानी से धो डालिए। नर्म, मुलायम और सुंदर त्वचा के लिए, रोजाना नहाने से पहले इस्तेमाल करें।

**लेपैक ओ एण्ड डी (चेहरे की निगरानी)**—तैलीय व शुष्क त्वचा के लिए फेस पैक, लेपैक-ओ, नीम तथा मुलतानी मिट्टी युक्त है जो गंदगी व मृत कोशिकाओं को साफ करता है। तैलीय गाठों को बंद करता है तथा तैलीय त्वचा को पुनर्जीवित करता है। लेपैक-डी, गुलाब तथा चंदन युक्त है जो शुष्क त्वचा को कोमल, स्वस्थ बनाकर रौनक देता है, पानी से पेस्ट बनाइए। 20 मिनट तक लगाइए, फिर धो डालिए।

**तेजस (तेजस्वी चेहरा)**—खुरदरी और बेजान त्वचा से कहिए अलविदा, अश्वगंधा, चंदन तथा हल्दी त्वचा के रोम छिद्रों को खोलें। त्वचा की गंदगी और धूल को बाहर निकालें। बेजान त्वचा को दे रौनक और चेहरे पे लाए प्राकृतिक निखार। पानी में पेस्ट बनायें, चेहरे पर यह पेस्ट लगाकर धीरे-धीरे मालिश करें। 20 मिनट तक लगाइए, फिर धो डालिए।

**फेअरकॉम (गोरी त्वचा)**—गुलाब, नीम, पपया, काकड़ी जैसी वनौषधियाँ त्वचा पर बड़ी कोमलता से असर करती हैं तथा आपका धीरे-धीरे ही सही, पर निश्चित तौर पर, रंग निखारती हैं। सप्ताह में दो बार, तीन महिने तक इस्तेमाल कीजिए। इसमें कोई हानिकारक रसायन, ब्लीच नहीं है। रंग निखारने का यह बड़ा ही सुरक्षित उपाय है। पानी में मिलाकर यह पेस्ट त्वचा पर लगायें तथा 20 मिनट बाद धो डालें।

**सतेज (चेहरे के दाग के लिए)**—अेलो, पपया, अंबा हल्दी तथा गुलाब आपके चेहरे से दाग-धब्बों को बड़ी ही कोमलता से, बिना नुकसान पहुँचाए, दूर करते हैं। आपके रंग-रूप को बेदाग, रौकनदार रखते हैं। पानी से पेस्ट बनाकर प्रभावित हिस्सों पर लगाइए। 20 मिनट तक लगाये रखें व धीरे-धीरे मालिश करें, फिर पानी से धो डालें।

**पिंपलॉर (मुँहासों के लिए)**—अर्जुन, पपया, जामुन, लाल चंदन, मंजिष्ठा जैसी वनौषधियाँ हैं जो कीटाणुओं का नाश करके त्वचा को साफ-सुथरा रखती हैं। ये असरदार वनौषधियाँ आपकी त्वचा के रंघों को खोल देती हैं। आपको सिर्फ इतना ही करना है कि पानी में पेस्ट बनाकर प्रभावित हिस्सों पर लगाना है। 20 मिनट बाद धो डालें।

**कुकुंबर जेल (त्वचा निखार)**—बिल्कुल ताजा और खास किस्म की ककड़ियों से निर्मित। बिना किसी रसायन या घोलक की प्रक्रिया से बना। चेहरे व त्वचा की कोमलता की हिफाजत करें। इसका उपयोग सौंदर्य उत्पादनों, स्किन टॉनिक, फेस पैक में किया जा सकता है। त्वचा उचटने व दाद आदि के दागों पर उपयोगी है। नियमित उपयोग से मुहांसे, दाग-धब्बे, झुर्रियां व चेहरे की शुष्कता जाती रहती है। लू लगने पर भी उपयोगी है। रंग रूप को निखारती है।

**ऑलो वेरा/कुकुंबर जेल (100/500 ग्राम)**—यह एक नया, विकसित फॉर्म्युला विशेष रूप से सौंदर्यतज्ञ और बड़े परिवारों को इस्तेमाल करने के लिए बनाया गया है। बड़ी बोटल होने से उँगलियोंसे या चम्मच से आसानी से इसे निकाल सकते हैं। इस फॉर्म्युला में नया और उत्तम गाढ़ा द्रव इस्तेमाल किया है।

**डोनाकेयर (हर्बल केश जेल)**—डोनाकेयर हेयर जेल यह केश्य वनौषधि और बालों के लिए उपयुक्त ऐसे अरोमाथेरपि तेलोंसे बनाया है। बाल गिरना, बालों में रूसी, असमय बाल सफेद होना रोककर बालों की त्वचा में खून का सप्लाय बढ़ाता है और केशग्रंथी को उत्तेजित कर उन्हें कार्यरत करता है।

**ऑलो वेरा जेल-वी (त्वचा की सुरक्षा)**—यह जलने, झुलसने, सिर की त्वचा की गर्मी, हाथ-पैरों के फटने, कीटकों को काटने तथा डंक मारने, जूता लगे व नैपी खरोंचो के लिए बेमिसाल है। इसके झुर्रियारोधी गुणों के कारण इसे अक्षर सौंदर्य उपचार माना जाता है। यह खरोंचों के निशान मिटा देता है। यह पुरुषों के लिए भी आफ्टर शेव जेल के रूप में उपयुक्त है। इसमें एन्टीएजिंग गुणधर्म भी हैं।

**ऑलो वेरा जेल लिक्वीड (पातळ)**—प्राकृतिक मॉइश्चराइजर, यह त्वचा से धूल, चिकनाई, पसीना, भद्दा मेकअप आदि साफ करने में सहायता करता है। अँखों के इर्द-गिर्द भी बेसाखा इस्तेमाल किया जा सकता है। सोने से पहले रोजाना इस्तेमाल करें। नाक, ठुड़ी, गर्दन व कान की जुड़वा जगहों पर विशेष ध्यान दें। बालों के फॉर्म्युले में इसका इस्तेमाल पेस्ट बनाने के लिए किया जाता है।

**कोमल (बेबी मसाज ऑइल)**—नर्म-मुलायम, पोषक और गुणकारी बेबी ऑइल, जो शिशु की त्वचा को स्वस्थ और कोमल बनाए रखे। कोमल में है लैक्डर, जो आराम की नींद लाए। बादाम और व्हीटजर्म त्वचा के लिए टॉनिक का और जोजोबा कैरियर (वाहक) का काम करे। तो हर दिन अपने शिशु को थोड़े सेकोमल से मालिश कीजिए और अपने मुझे को स्वस्थ-तंदुरुस्त व हंसता-मुस्कराता रखिए।

**जास्वंद केश तेल (हर्बल केश तेल)**—केशवर्धक वनौषधियों से युक्त यह एक खुशबूदार केश तेल है। जिनके बाल रूखे एवं पतले हैं उनके लिए लाभदायक है। रात को बालों को मसाज करने के लिये एक आदर्श केशतेल है। असमय बाल सफेद होना, झड़ना और रूसी से बचने के लिए उपयुक्त।

### स्वास्थ्य की देखभाल

**क्लीन्टीथ (दूथ पाउडर)**—बबूल, त्रिफला, बकुल, पीलू जैसी शुद्ध वनौषधियों से युक्त। मसूड़ों से खून आने जैसी दाँत संबंधी शिकायतों से तुरंत राहत के लिए विशेष तौर से बना। इसमें एस्ट्रीजंट के समस्त गुण हैं। सिंथेटिक दूथपेस्टों के मुकाबले से 100 प्रतिशत सुरक्षित है। अपने दाँत व मसूड़ों पर लगाकर मलिये, फिर पानी से कुल्ला कर लीजिए।

**बॉडीलाईन (वजन घटाने के लिए)**—मोटापा कम करने के लिए 100 प्रतिशत प्राकृतिक उपाय, इसमें वनौषधियाँ हैं जैसे-गुलवेल, गुडमार, विजयसार, जामुन और नागरमोथा। आप बिना नुकसान वजन घटा सकते हैं। रोजाना नाश्ते के बाद सूचना अनुसार लें।

**कफ-ऑफ (खाँसी के लिए)**—अडुलसा, सुंठी, पिप्पली युक्त पुरानी खाँसी

का खास वनौषधि उपाय। गले को राहत पहुँचाए, खिचखिच का नामो-निशान मिटाये, खांसी को बिल्कुल ठीक करें। इसमें न तो अलकोहल है और न ही इससे धड़कन तेज होने और सुस्ती आने जैसे असर होते हैं।

**हृदय (हृदय शक्तिवर्धक)**—यह टानिक हृदय को टोन-अप करता है। अर्जुन, अश्वगंधा और शतावरी का कमाल। रोजाना दूध में लें, इससे 6 महीने में यह आपकी जिंदगी में हार्दिक परिवर्तन कर देगा।

**लिवेरीन (यकृत बलवर्धक)**—कुटकी, भुई आमला, अनीस ऑइल, अेलो इत्यादि मिलकर श्रेष्ठ लिवर टॉनिक बन जाते हैं। तथा लिवर जैसे महत्वपूर्ण अंग को क्रियाशील व पुनर्जीवित कर देता है। इस मिश्रण को पानी में घोलकर उल्लें तथा झुंडा करके छान लें। अच्छे स्वास्थ्य के लिए नियमित नाश्ते के बाद इसे लें।

**ईजी-वे (कब्ज के लिए)**—तनाव और अनाप-शनाप खाने की आदतों से कब्ज होती है। सोनामुखी, त्रिफला और काला नमक युक्त ईजी-वे पेट को हल्का रखता है। भारीपन व गैस के एहसास को खत्म करता है। एक से दो चम्मच पाउडर लेकर एक कप पानी में मिलाइए और सोते समय पी जाइए। जब आवश्यकता हो तभी लीजिए।

**डीटॉक्स (रक्त शुद्धि के लिए)**—डीटॉक्स हमारे शरीर में जमा टॉक्सिन को दूर करते हैं, जिसका असर हमारी त्वचा और बालों पर होता है, मुँहासों, चकतों और दागों के इलाज में गुणकारी है, इसमें है नीम, अेलो वेरा, ब्राह्मी, अंबा हल्दी आदि डीटॉक्स टॉक्सिन शुद्ध करता है और एक बेहतर स्वास्थ्य प्रदान करता है।

### इसेंशियल ऑइल्स (अरोमा थेरपी-सुगंधी उपचार तेल)

|           |            |             |           |
|-----------|------------|-------------|-----------|
| आल्मंड    | क्लेरीसेज  | ज्योतिष्मती | पेपरमिंट  |
| अनीस      | क्लोवलीफ   | रवस         | पचौली     |
| ऑप्रिकॉट  | क्लोव बड   | लेमन        | रोजवूड    |
| ऑहोकेंडो  | केमोमाईल   | लॅव्हेंडर   | रोज       |
| बेसिल     | सिनेमून    | लेमनग्रास   | रोजमेरी   |
| बरग्यामट  | सिट्रोनेला | मोतिया रोशा | सोफिया-जे |
| ब्लैकपिपर | युकेलिप्टस | नीम         | टेगीटस    |
| केड       | जेरेनियम   | नस्य        | तुलसी     |
| केम्फर    | जिंजरग्रास | नेरोली      | तील तेल   |
| कारडामोम  | जिंजर      | नटमेग       | टी ट्री   |

|           |          |               |               |
|-----------|----------|---------------|---------------|
| सेडार     | ग्रेपसिड | ऑलिव्ह        | वेटीवर्ट      |
| चंदन      | जास्मिन  | ओ.आर.पी.एल.   | व्हीटजर्म     |
| चौलमुग्रा | ज्युनिपर | ऑरेंज (संतरा) | वोलनट         |
| केलामस    | जोजोबा   | पामारोशा      | यॅलेंग यॅलेंग |

### सिंगल हर्बल पाउडर

—50 ग्राम पैक/बोटल में—

|                |                  |                |                   |
|----------------|------------------|----------------|-------------------|
| अनंतमूल        | गोरखमुंडी        | कुलिंजन        | लाल (रक्त) चंदन   |
| अडुलसा         | गुडमार           | कुटकी          | संतरा छाल         |
| कोरफड (कुमारी) | गिलोय            | लोध्रा         | शतावरी            |
| आमला           | गुलाब            | माका (भृंगराज) | सीकाकाई           |
| अर्जुन         | हरडा             | मंजिष्ठ        | सोनामुखी (सेन्ना) |
| अश्वगंधा       | निली (इंडिगो)    | मेंहदी         | सीताफल            |
| आमहल्दी        | जामुन            | मुलतानी मिट्टी | सुंठी             |
| बबूल           | जटामांसी         | मंडूर          | शंखपुष्पी         |
| बकूल           | गुडहर (जबाकुसुम) | नीम            | तुलसी (बेसील)     |
| ब्राम्ही       | मुलेठी           | नागरमोथा       | उंबरसाल           |
| बावची          | कचूर सुगंधी      | पपैया          | वावडिंग           |
| बेहडा          | खैर              | पुदीना         | वेखंड             |
| चंदन           | खस               | पीपली          | विदारीकंड         |
| दाडीम          | काला नमक         | रीठा (अरीठा)   | विजयसार           |

इन उत्पादों को प्राप्त करने हेतु संपर्क सूत्र है—

डॉ. जैन्स फॉररेस्ट हर्बल्स प्रा.लि.

राज इंडस्ट्रियल कॉम्प्लेक्स, यूनिट नं.ए-10, दूसरी मंजिल,  
मिलिटरी रोड, मरोल, अंधेरी (पूर्व), मुम्बई (महा.)-400059  
फोन नं.-29201697, फैक्स- 91-22-2920 1441



## गर्भपात — माँ की ममता पर कुठाराघात

जहाँ जैन एवं वैदिक शास्त्रों में सौभाग्यवती पतिव्रता नारी तथा कुमारी कन्याओं को महान् पवित्रता तथा व्यवहारिक मंगल का प्रतीक माना गया है, वहीं वैदिक पुराणों में भी नारी को देवी के रूप में स्वीकार किया गया है। मनुस्मृति में तो यहाँ तक कह दिया है कि—

“एक आचार्य दस अध्यापकों से श्रेष्ठ हैं, एक पिता सौ आचार्यों से श्रेष्ठ है और एक माता एक हजार पिताओं से श्रेष्ठ है।”

इतनी सारी विशेषताओं से समन्वित एक नारी अब अपनी स्वाभाविक ममता का गला घोटकर गर्भपात जैसे क्रूर कर्म की ओर आगे बढ़ती है तब उसे वर्तमान युग में क्या संज्ञा प्रदान की जाए? इसके बारे में आप स्वयं चिंतन करें।

आज विश्व में 10 से 15 प्रतिशत विवाहित जोड़े सन्तानहीन हैं। विभिन्न सर्वेक्षणों से यह ज्ञात हुआ है कि सन्तानहीनता की यह व्याधि दिनों-दिन तेजी से बढ़ रही है तथा दूसरी ओर गर्भपात का प्रचलन भी तेजी से बढ़ रहा है जो धर्मप्रधान भारत देश के लिए सबसे अधिक विचारणीय विषय बन गया है।

जैसे-जैसे विज्ञान प्रगति कर रहा है मानव के विचार व व्यवहार पतन की ओर अग्रसर हो रहे हैं। मानव मानव का भक्षक कैसे बन सकता है यह तथ्य गर्भपात करवाने की इच्छा से ही स्पष्ट हो जाता है। विभिन्न सरकारी व गैर सरकारी संस्थाओं द्वारा एकत्रित किये गये आँकड़े इस बढ़ती महामारी का स्पष्ट प्रमाण हैं।

डॉ. हिन्शा द्वारा किये गये एक सर्वेक्षण के अनुसार पूरे विश्व में लगभग 2.5 से 5 करोड़ तक गर्भपात प्रतिवर्ष किये जाते हैं। इससे स्पष्ट है कि पूरे राजस्थान राज्य की आबादी के बराबर मानव संख्या को प्रतिवर्ष मानव द्वारा ही मौत के घाट उतार दिया जाता है। इन 2.5-5 करोड़ गर्भपातों में से केवल आधे ही कानूनी तरीके से सम्पन्न होते हैं, शेष के लिए घातक किस्म की गैर कानूनी विधियों को काम में लाया जाता है।

एक अन्य सर्वेक्षण के अनुसार विश्वभर में गर्भधारण करने वाली महिलाओं में से 24.32 प्रतिशत तक महिलाएँ गर्भपात करवाती हैं, अर्थात् एक तिहाई जिन्दगियाँ इस संसार में आने से पहले ही अपने ही माता-पिताओं द्वारा मौत के

घाट उतार दी जाती हैं। कैसा घिनौना है यह व्यवहार अपनों का अपनों के प्रति, मानव का मानव के प्रति?

उपरोक्त दिये गये आँकड़े पूर्व वर्षों के हैं जबकि यह समस्या दिनों-दिन विकरालरूप धारण करती जा रही है। ये आँकड़े स्पष्ट रूप से यह इंगित करते हैं कि मानवता को खतरा एटम-बम से नहीं है बल्कि गर्भपात के इस घिनौने कृत्य से है। मानवता के विनाशक इस पैशाचिक खतरे की तरफ ध्यान देने की आवश्यकता है, जो कि अंदर ही अंदर फैलकर मानव की मूलभूत विशेषताओं प्रेम, वात्सल्य व संरक्षण की भावनाओं को हिंसक प्रवृत्तियों में बदल रहा है।

तथाकथित वैज्ञानिक प्रगति द्वारा कुछ औषधियाँ ऐसी इजाद की गई हैं कि उनका मुँह से सेवन कर स्वयं द्वारा गर्भ समापन किया जा सकता है। यह सब मानवता, नैतिकता, मर्यादा और पारस्परिक विश्वास के लिए जहर के समान है। अतः समय रहते विवेकशील व्यक्तियों को ऐसे कुकृत्य को इस विश्व से समाप्त करने का प्रण करना होगा।

## गर्भ हत्या-मानव हत्या

आज विज्ञान ने भली-भाँति सिद्ध कर दिया है कि गर्भ का जीव भी एक स्वतंत्र मानव-प्राणी है। गर्भधान के समय ही एक ऐसा भिन्न व्यक्तित्व उत्पन्न हो जाता है जिसमें अनेक वर्षों तक प्रगति करने की क्षमता होती है। उस व्यक्तित्व की ऊँचाई, बौद्धिक स्तर, चलने-बढ़ने का तरीका, खून की जाति आदि भी तभी निश्चित हो जाते हैं। प्रथम क्षण से ही उसकी विकास यात्रा प्रारंभ हो जाती है। यह उत्तरोत्तर विकास-क्रिया जीव के बिना असंभव है। जड़-पदार्थ से जीवन संभव नहीं।

### गर्भ में मानव-जीव का स्वतंत्र विकास क्रम—

**प्रथम सप्ताह—**गर्भधान के पहले सप्ताह में माता के गर्भाशय में नया जीव पैदा होकर विकसित होने लगता है।

**दूसरा सप्ताह—**माता द्वारा ग्रहण किये गये भोजन से नये जीव का पालन-पोषण होने लगता है।

**तीसरा सप्ताह—**आँखे, रीढ़, मस्तिष्क, फेफड़े, पेट, जिगर, नरवस-सिस्टम, आन्तें, गुर्दे आदि की निर्माण प्रक्रिया प्रारंभ हो जाती है। अठारहवें दिन दिल की धड़कन प्रारंभ हो जाती है।

**चौथा सप्ताह**—सिर बनने लगता है। रीढ़ की पूरी बनावट-सुषुम्ना बनकर पूरी हो जाती है। हाथ-पैर बनने लगते हैं। दिल की धड़कन बराबर जारी।

**पाँचवाँ सप्ताह**—छाती और पेट तैयार होकर एक-दूसरे से अलग हो जाते हैं। सिर, आँखें, आँखों पर लेंस और दृष्टिपटल (Retina) आ जाता है। कान बन जाते हैं। हाथों और पैरों पर उंगलियाँ फूटने लगती हैं।

**छठा और सातवाँ सप्ताह**—बच्चे के शरीर के सब अंग-सिर, चेहरा, मुँह, जीभ आदि बनकर तैयार हो जाते हैं। बच्चे के लिंग का पता लग सकता है। वह अपने अंग हाथ-पाँव हिला सकता है। गुदगुदाने से बच्चे में प्रतिक्रिया होती है।

**आठवाँ सप्ताह**—बच्चा स्पर्श व दर्द का अनुभव करने लगता है। मुट्टी बंद कर सकता है। अंगूठा चूस सकता है। तैरने की मुद्रा में हिलता है। जागने व सोने की क्रिया करने लगता है। किसी वस्तु को छुआए जाने पर उससे बचने का प्रयत्न करता है। उसके दिल की धड़कन अल्ट्रासोनिक स्टेथोस्कोप पर सुनी जा सकती है। उसके अंगूठे की छाप वैसी हो जाती है जैसी उसकी 80 वर्ष की उम्र में होगी। मस्तिष्क की लहरों और तरंगों को मापा जा सकता है।

**ग्यारहवाँ-बारहवाँ सप्ताह**—शरीर के सभी तंत्र चालू। नसों व मांसपेशियों में सामंजस्य स्थापित होता है। उंगलियों पर नाखून उगने लगते हैं। इन तीन महीनों में बच्चे का पूरा गठन हो जाता है, इसके बाद नौ मास तक लगातार बढ़ता रहता है। फिर उसका जन्म होता है।

## गर्भ के बच्चे को मारने के 4 तरीके

1. **चूषण पद्धति (Vacuum Suction)**—पम्पिंग मशीन द्वारा गर्भ के बच्चे के टुकड़े-टुकड़े करके कूड़ा-करकट की तरह बाहर खींच लिया जाता है।

2. **फैलाव व निष्कासन विधि (Dilatation & Evacuation)**—इसमें गर्भाशय के मुँह को खोलकर गर्भ के बच्चे को चाकू जैसे तेजधार वाले शस्त्र से टुकड़े-टुकड़े करके बाहर फेंक दिया जाता है।

3. **जहरीली क्षार वाली पद्धति (Toxic-Salt Method)**—एक लम्बी मोटी सुई गर्भाशय में भोंक दी जाती है, उसमें पिचकारी की सहायता से नमक का क्षारवाला जहरीला पानी छोड़ दिया जाता है। चारों ओर से घिरा बालक वह जहरीला पानी निगल जाता है। वह जहर खाए व्यक्ति की तरह तड़फने लगता

है और घुट-घुटकर वहीं दम तोड़ देता है। फिर उसे गर्भ से बाहर निकाल लिया जाता है।

4. **ऑपरेशन (चीरफाड़ विधि) (Operation Method)**—ऑपरेशन विधि द्वारा पेट को चीरकर बच्चे को जिंदा ही बाहर निकाल लिया जाता है, फिर उसे आग में जलाकर मार दिया जाता है या उबलते पानी में डुबोकर मार दिया जाता है।

ज्ञातव्य है कि भारत में प्रतिवर्ष 51 लाख 47 हजार गर्भ हत्याएँ हो रही हैं। यह संख्या दिन-दूनी रात चौगुनी से बढ़ रही है। गर्भ हत्या के कारण भारत में प्रतिवर्ष 5 लाख स्त्रियों की मौत हो जाती है। दिन प्रतिदिन इस संख्या में भारी वृद्धि हो रही है। लाखों स्त्रियाँ जीवनभर गर्भपात के कारण भयंकर पीड़ा सहती हैं। शरीर रोगों का घर बन जाता है। सम्पूर्ण परिवार दुःखी रहता है। घर नरक बन जाता है। गर्भ हत्या के कारण प्रायः स्त्रियाँ बाँझ बन जाती हैं, कारण निम्नलिखित हैं—

1. **रोग संक्रमण (Infection)**—गर्भपात के दौरान गर्भस्थ शिशु के शरीर का कोई कटा-फटा अंग या भाग-गर्भाशय में बचा रह जाने के कारण या ऑपरेशन के समय कोई अन्य कमी रह जाने के कारण ट्यूबल इन्फेक्शन हो सकता है और स्त्री बाँझ बन जाती है।

2. **गर्भाशय में छेद होना (Perforation of the uterus)**—गर्भपात के लिए प्रयोग किये गये औजार (Curette) से बच्चेदानी में छेद हो सकता है और परिणामस्वरूप उसे निकालना भी पड़ सकता है और इस तरह स्त्री हमेशा के लिए बाँझ बन जाती है।

गर्भ हत्या पर बनी सच्ची फिल्म-Silent Scream में 10 सप्ताह की गर्भस्थ बच्ची की मौत की भयानक चीख से सारा विश्व रो उठा—वर्ष 1984 में 'नेशनल राईट्स टू लाईफ कन्वैन्शन' कनाटसिटी, मिसौरी में हुआ था। इसमें एक प्रतिनिधि Mrs. Sandy Ressel ने Dr. Bernard Nathanson के द्वारा एक Suction Abortion गर्भपात पर बनाई गई अल्ट्रासाउण्ड मूवी का जो विवरण दिया था, उसका संक्षेप मात्र ही यहाँ दिया जाता है। (उन्हीं के शब्दों में)

गर्भ की यह बच्ची अभी 10 सप्ताह की थी। काफी चुस्त थी। अपनी माँ की कोख में खेलते, करवट बदलते और अंगूठा चूसते हुए हम उसे देख रहे थे।

उसके दिल की धड़कन 120 की साधारण गति से धड़क रही थी। सब कुछ बिल्कुल सामान्य था परन्तु हमें तो गर्भहत्या पर वास्तविक फिल्म बनाने के लिए अब उसकी हत्या करनी जरूरी थी। अब हम उस बच्ची को माँ के गर्भ से बाहर निकालने के लिए सक्शन पम्प द्वारा उसके टुकड़े-टुकड़े करने में जुटे।

**सक्शन पम्प द्वारा गर्भस्थ बच्ची की हत्या**—जैसे ही सक्शन पम्प, उस नन्ही-मुन्नी प्यारी-प्यारी मासूम-गुड़िया सी बच्ची के टुकड़े-टुकड़े करने उस बच्ची की ओर बढ़ा, बच्ची बुरी तरह से डर गई। उसके दिल की धड़कन 200 तक पहुँच गई। वह बच्ची पीड़ा व दर्द के मारे छटपटाती हुई, कराहती हुई, सिकुड़-सिकुड़कर इधर-उधर घूम-घूमकर तड़फती हुई उस औजार से बचने का प्रयत्न करने लगी। आखिर उस बच्ची ने मुँह खोलकर जोर से चीखने का प्रयत्न किया, जिसे Dr. Nathanson द्वारा Silent Scream 'मूक चीख' के नाम से पुकारा। अन्त में उस पम्प ने अपना काम शुरू कर दिया और उस मासूम बच्ची के हाथ, पैर, पेट, छाती, मुँह तथा सिर आदि के टुकड़े-टुकड़े करके गर्भ से बाहर फेंक दिये। चारों ओर खून ही खून फैल गया। यह दृश्य इतना भयानक, वीभत्स और घृणित था कि यदि कोई गर्भ हत्या करने वाला भी देख ले तो उसके भी दिल के टुकड़े-टुकड़े हो जाएं और वह कभी भी गर्भहत्या करने का साहस न करे।

इस 'गर्भपात फिल्म' के निर्माता डॉ. नैथान्सन ने जब फिल्म को स्वयं देखा और जैसे ही उस बच्ची के टुकड़े-टुकड़े होते देखे और उस प्यारी बच्ची की दर्दभरी चीत्कार सुनी तो उनके दिल पर उस समय इतना जबर्दस्त वज्रपात हुआ कि वे हमेशा के लिए अपना क्लिनिक छोड़कर तुरंत भाग गए तथा फिर वे कभी वापिस नहीं आए।

16 सप्ताह तक के भ्रूण में जीव नहीं होता, वह तो सिर्फ माँस का निर्जीव लोथड़ा (पिण्ड) मात्र ही है, यह वैज्ञानिक मान्यता इस फिल्म द्वारा बिल्कुल झूठी साबित हुई। हर गर्भपात में जीव हत्या अनिवार्यरूप से होती ही है।

**गर्भपात से पुरुष-स्त्री का अनुपात बिगड़ गया**—गर्भ में लड़कियों को ही मारने के कारण अब देशमें प्रति हजार पुरुषों के पीछे 910 स्त्रियों की संख्या रह गई है। हरियाणा में तो 1991 की जनगणना के अनुसार महिलाओं का अनुपात प्रति हजार 865 था। यह संख्या दिन प्रतिदिन तेजी से घटती जा रही है, परिणामस्वरूप देशभर में अनाचार, व्यभिचार, बलात्कार, वेश्यागमन, बहुपतिप्रथा

आदि को बढ़ावा मिलेगा। एड्स जैसी महामारी गंभीररूप से फैलेगी। देश व समाज की बर्बादी निश्चितरूप से हो जायेगी।

अतः नरक का द्वार खोलने वाले इस महापाप से स्वयं को बचाना प्रत्येक श्रावक का पुनीत कर्तव्य है। सभी माता-बहनों को विशेषरूप से यह ध्यान रखना होगा कि हम कभी भी कृत-कारित-अनुमोदना किसी भी प्रकार से इस पाप को प्रश्रय नहीं दें क्योंकि आज का किया पाप निश्चितरूप से आज या कल हम ही को भोगना होगा। पंचेन्द्रिय जीव की संकल्पी हिंसा नरकों में ले जानी वाली है, जिससे हमें बचना ही है। कभी-कभी ऐसे सत्य उदाहरण भी देखे जाते हैं कि जिस गर्भस्थ शिशु को लड़की समझकर गर्भपात कराया जा रहा था और कदाचित् उसकी भ्रूणहत्या किसी कारण से नहीं की गई तो नवमास बाद उसने स्वस्थ पुत्र के रूप में जन्म लिया।

इंदौर एवं इलाहाबाद के किन्हीं संभ्रान्त परिवारों से ये साक्षात् जानकारियाँ प्राप्त हुई हैं कि अल्ट्रासाउण्ड एवं सोनोग्राफी मशीन द्वारा बहू के गर्भ में बालिका भ्रूण जानकर भी घर के सास-ससुर ने भ्रूणहत्या करवाने का तीव्र विरोध किया अतः भ्रूणहत्या बच गई, पुनः 9 माह पश्चात् बहू ने स्वस्थ पुत्र को जन्म दिया। यहाँ यह विशेष ज्ञातव्य है कि मशीनों से किये गये निर्णय भी कदाचित् असत्य हो जाते हैं अतः अहिंसाप्रेमियों को मशीनों द्वारा भ्रूण परीक्षण नहीं कराना चाहिए।

जो भी हो, संसार का सुख पुत्र या पुत्री पर नहीं वरन् अपने किये कर्मों के आश्रित है। पापकर्म के उदय से जीवन भर पालन-पोषण किया गया पुत्र भी वृद्धावस्था में दुत्कार देता है और पुण्यकर्म के उदय से परायी हुई बेटी भी तन-मन-धन से सेवा करती है, अतः कर्म सिद्धांत पर अटल विश्वास रखते हुए पुत्र-पुत्री पर समान स्नेह रखें एवं गर्भपात जैसे कुकृत्य को समाज से तिरोहित करने का संकल्प लें।

